सुन्दरशृङ्गार।

अर्थात्

प्रसिद्ध कविकुलभूषण कविराज सुन्दर कवि-
कृत नायिकाभेद तथा, विभाव, अनु-
भाव सञ्चारीभाव और विप्रलम्भआदि
वर्णन

जिसे अत्यन्त शुद्धता पूर्वक बाबू जगन्नाथ
प्रसाद उपनाम रत्नाकर कवि की सहा-
यता से भारतजीवन सम्पादक बाबू राम
कृष्ण वर्म्मा ने एक प्राचीन प्रति से
शोधकर प्रकाश किया।

काशी।

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुआ।

सन् १८९० ई०।

प्रथम बार १०००] [मूल्य।)

भूमिका।

रसिक पाठकों के आनन्दार्थ हमने इस ग्रंथ को एक हस्तलिखित अत्यन्त प्राचीन कापी खोज कर निकाली और यवन शब्द शुद्ध कर इसे प्रकाश किया। सुन्दर कवि पादशाह शाहजहां के समय में हुये हैं जिनका राज्य सन् १६२७ से लेकर सन् १६५८ ई० तक था। यह ग्रन्थ सम्वत् १६८८ में बना अर्थात् ईसवी सन् १६३२ में। इस पुस्तक में हमने कई जगह "दोहरा" शब्द लिखा है, जिसको लोग दोहा न समझें किन्तु वह हरिपद छन्द है जिसका लक्षण यह है कि—

पहिले तीजे चरण में कला कला * परिमान।
दूजे चौथे शिवकला † हरिपद छन्द बखान॥

* १६ मात्रा † ११ मात्रा कहीं कहीं १२ मात्रा भी होती है।

दोहे से और हरिपद छन्द में किञ्चित् अन्तर है सो पाठकों को ऊर्ध्वलिखित प्रमाण से विदित हो जायगा। हम आशा करते हैं कि हमारे काव्य प्रेमी रसिक लोग इस कवि की काव्यामृत से निज हृदय को सन्तोष दे हमारे इस परिश्रम को सुफल करेंगे।

प्रकाशक
रामकृष्ण वर्म्मा
सम्पादक भारतजीवन
काशी।

अथ सुन्दरशृङ्गार ।

दोहा ।

देवी पूजि सरस्वती पूजि हरी के पाइ ।
नमस्कार कर जोरि कै कहै महाकबिराइ ॥१॥
नगर आगरो बसतु है जमुनातट सुभथानु ।
तहां पातशाही करैं बैठे साहिजहानु ॥ २ ॥
साह बड़ोकबिमुखतनिक क्योंकरि बरन्योजाँहि।
ज्यों तारे सब गननकै मूठी मे न समाँहि ॥३॥
जिन पुरुषन के बंश में उपज्यो साहिजहानु ।
तिन साहनके नामको अब कवि करै बखानु॥४॥

छप्पै ।

प्रथम मीर तैमूर लियो साहिबकिरान पद ।
ताको मीरासाह बहुरि सुलतान महम्मद ॥
अबूसैद पुनि उमरशेख बाबर जु हुमाऊँ ।
साहि अकब्बर साहि जहांगीरहि जु गनाऊँ ॥
तिहि बंश भयो कविराज भनि बड़भागी बड्डिम

बखत । धरि अटलछत्र बैठ्यो ध्रुव साहिजहां दिल्ली तखत ॥ ५ ॥

त्रिभंगी छन्द ।

जबलग्गि भवानी सिव सेनानी रवि अस-मानी पन्थनि मैं । जबलग्गि सुरग्गन गगन उ-डुग्गन बरनि अष्टगन ग्रन्थनि मैं ॥ जबलग्गि पुरन्दर हिमिगिरि मन्दर बानी सुन्दर भनि सुखदा । तबलग्गि रहो चिर भुव ध्रुव ज्यों थिर साहिजहां सिर छत्र सदा ॥ ६ ॥

दोहा ।

इक छिनुके गुन साह के बरनैं सब संसार ।
जीभि थकै बीतै बरष तऊ न पावैं पार ॥ ७ ॥
तीनि पहर लौं रवि चलै जाके देसन मांह ।
जीति लई जगती इती साहिजहां नरनाह ॥
कुल समुद्र खाई किये कोट तीर के ठांउ ।
आठो दिसि यों बसकरी ज्यों जीवतु इकगांउ ॥
साहिजहां तिन गुनिन को दीने अनगनदान ।
तिनमैं सुन्दर सुकवि को कियो बहुत सनमान ॥

नगभूषन मनि सब दिये हय हाथी सिरपाइ ।
प्रथम दियो कविरायपद बहुरि महाकविराइ ॥
विप्र ग्वालियर नगर को बासी है कविराज ।
जासों साह मया करैं दास गरीबनिवाज ॥१२॥
जब कविको मन यों बढ्यौ तब बुधि कियो बिचार ।
बरनि नायिका नायकनि रच्यो ग्रन्थ विस्तार ॥
सुन्दरकृत सिंगार है सकल रसनि को सार ।
नाम धर्‌यो या ग्रन्थ को रचि सुन्दरसिंगार ॥१४॥
जो सुन्दरसिंगार को पढ़ै गुनै सुज्ञान ।
तिन जानौं संसार मैं कियो सुधारस पान ॥१५॥
संवत सोरह से बरस बीते अट्ठासीति ।
कातिक सुदि षष्ठी गुरुहिं रच्यौ ग्रन्थ करिप्रीति ॥

अथ सिंगाररसान्तर्गत नायिका कथन—दोहा ।

नौरस मे सिंगार रस सब ते नीको आहि ।
तामे नीको नायिका बरनत हौं अब ताहि ॥
सो पुनि सुंदरकवि कहै तीनि भांति की नारि ।
स्वीया परकीया अवरु सामान्या सुबिचारि ॥१८॥

स्वीया कहिये आपनी परकीया परनारि
सामान्या ताकों कहैं जाकों धन सो प्यार ॥१९॥

अथ स्वकिया लक्षण ।

ये लक्षण स्वीयानि के बरनत हैं कविराज
पति की अति सेवा करै सील सुधाई लाज॥२०॥

कवित्त ।

देखति नैन के कोरनि लौं अधरानही मै मुसक्यान को थानो। बोलति बोल सो कंठही मैं चलतैं पग पैं न कहूं अहटानो ॥ सुंदर रोस नहीं सपने अरु जो भयो तो मनही मैं बिलानो। मैं बसुधा ऽस सुधाई सबै पर याकी सुधाई सुधाई है मानो ॥ २१ ॥

दोहा ।

सोई स्वीया तीनि विधि बरनत हैं कविराइ ।
मुग्धा मध्या प्रौढ़िका बरनौं तिन्हे बनाइ॥२२॥

अथ मुग्धा लक्षण—दोहा ।

जाके तन जोवन झलक झलकै कछु इक आइ।
मुग्धा तासों कहत हैं सब कविन के राइ॥२३॥

कवित्त ।

चितकौं अब चाहति हैं तन सुंदर जोबन जोतिन की चिनगीं । थिरताई की पाँवनि पाँवनि मैं पुनि चंचलता की डगैहूं डगीं ॥ बतिआनि की यौं धुनि पावत हौं मुख तें निकसैंगो सुधा सौं [illegible] इन आँखिन सूधेहि देखति ही अब [illegible] तिरछान लगीं॥२४॥

दो ।।

सो मुग्धा है भांति की पण्डित करत बिबेक। कहियै इक अज्ञात है ज्ञातजोबना एक ॥२५॥

अथ अज्ञात दोहरा ।

अपने तनमै जोबनआगम जो नहिं जानत बाल ताहि कहत अज्ञातयौवना सुंदर गुनी रसाल॥

कवित्त ।

धाइ सो जाइ कै धाइ कह्यो कहूं धाइ कै पूछिये का तें ठई है । बैठि रही निहचिन्त कहा सुनि मेरी सबै सुधि भूलि गई है॥ सुंदर देखि डेराति इन्है उपजी उर माँझ उपाधि नई

है। काँचो कली सी ही कालि परों अब छाटी सुपारी सी आजु भई है ॥ २७ ॥

अथ ज्ञात ।

जोबन अपने देह मै आयो जानति बाम ।
कवि सुंदर तासों कहै ज्ञातयौवना नाम ॥२८॥

छाती नितम्ब ल… …ा के अलीनहु को मनसा ललचानी। ऐसी नवेली को नायक ह्वै री आपुस में सब यौं बतियानी ॥ सुंदर जोबन रूप सराहत सुंदरि आँखिनही मै लजानी । डीठि बचाइ सखीन की पै निज देह कों देखि उही मुसुकानी ॥ २९ ॥

नवोढ़ा लक्षण—दोहा ।

मुग्धापन में ब्याहिये कहैं नवोढ़ा ताहि ।
सकुचति डरपति रतिकथा सुनें न भावै जाहि॥
नवोढ़ानि की रीति यह नवभूषन को चाह ।
लाज करत ऐसी लसैं को करि सकै सराह॥३०॥

कवित्त ।

जाके रूप आगे रूप रति को रतीकु लागै तिलौ भरि छबि के तिलोत्तमा न तूल है। सुंदर नवेली अलबेली बनी दुलहिनि अंग अंग रंग रंग पहिरे दुकूल है ॥ झनक मनक होत भूषन नवीन बनै कनक बरन तन चंपे कैसो फूल है। आलिन के ओट ह्वै कै चिक मांझ दृग दै कै दुरि दुरि दौरि दौरि देखि जाति दूलहै ॥ ३२ ॥

खेलति ह्यां दुलहिनि सुंदर सहेली साथ सोनै की सी बेली अलबेली सी बधू नई। आपुस मै सखी सब सराहति ताहि चाहि धाइ कह्यो डीठि लागि जायगो रहो दई ॥ तब मिसु घालि कह्यो स्यांलहो मै आये लाल तिहि काल वह बाल ऐसी हाल ह्वै गई। आंखैं भरि आंसू मुख पीरी परि आहू चौंकि चिरिया की नाईं भाजि भौन कोन मैं गई ॥ ३३ ॥

अथ नवोढ़ा सुरतान्त— कवित्त ।

गोनै की राति के औरही कोन मै बैठि

रही दुलही अनबोलैं। हाथ सौं छाती छपाइ कै सुंदरनार नवाइ दुराइ कपोलैं॥ देखन कों जुरि आईं सबै तिय नन्द जेठानी करैं यों कलोलैं। एक हँसैं इक बाँह गहैं इक आँचर ऐंचि के घूंघुट खोलैं॥ ३४॥

अथ विस्रब्धनवोढ़ा—दोहरा।

सकुच बहुत डर छूटै रंचक पतिसों नेकु पत्याय।
तासों पुनि विस्रब्धनवोढ़ा कहैं महाकविराय॥

यथा।

पग सों पग पींडरी पींडरी सों कवि सुंदर जंघनि जोरि रही। कुच दोऊ गहे कर एकही सों कर एक सो नीवी सु गाढ़े गही॥ एहि भांति लिये डर पीतम के संग सोवति थी लडही * दुलही। अलि हौं तो गई छकि सी छवि देखि कै राति की रीझि न जाति कही॥ ३६॥

* यह शब्द लज्जाशील है अतएव यदि यहां नवला या और कुछ पाठान्तर होता तो अच्छा होता।

विश्रब्धा को सुरतान्त—कवित्त ।

कंचन सी काया ही मुकुन्द-कैसी होय गई सुन्दर सिथिल अंग सम्हरै न डिग तें। आलस बचन चल बिचल है आभूषन सकुचति मन मन सुरति कों तिग तें ॥ मेरे मन छाई है छबीली की यहै सुछबि छिन भरि छूटति न अजहूं ता द्रिग तें । रगमगी आँखियनि सगबगी अलकनि डगमगी डगनि डगरि चली ढिग तें ॥ ३७ ॥

अथ मध्या लक्षण—दोहा ।

लाज काम जाके जबहि तन मैं होत समान ।
सुंदर मध्या नायिका तासों कहैं सुजान ॥३८॥

कवित्त ।

जो फिरि करोट देइ तौहै बिछुरन सम छाती लागि रहै लाज लागति पै अतिही । आँखि मूंदि रहै पिय मूरति न देखी जाइ कै-सहूं कै खोलि पै न घूंघरि सकत ही ॥ पिय पास परै अंक भरै केलि करै तऊ सोचतही राति

आति ऐसी छूह गति ही। सुंदर यों काम कि सकोच कि दृबीच बाल मनसा ज्यों लीन होति सुमति कुमतिही ॥ ३९ ॥

याको सुरति।

दम्पति करत रति सुंदर सरस अति वारो रतिपति रति कैयक सहस कों। लाल की भुजानि पर ललना की लसैं जानु गाढ़े गहि ग्रीव पीवै अधर सुरस कों ॥ ता समै प्रिया कि पाइ पिय की कटी पै आइ रहे हैं जँघाइ ऐसे आंगुरीन दस कों। मेरे जान पंचबान पंच पंचबाननि कै बाँधि चल्यो दुहूं ओर दोय तरकस कों * ॥ ४० ॥

याको सुरतान्त।

बाल उठी रति केलि किये कवि सुन्दर मोहत अंग रमोहैं। आरसी मैं मुख देखि स-

* द्रवणं शोषणं बाणं तापनं मोहनाऽभिधम्।
उन्मादनं च कामस्य बाणाः पञ्च प्रकीर्त्तिताः ॥

अपि च।

अरविन्दमशोकंच चूतं च नवमल्लिका।
नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः।

कोचन सोचन लोचन होत लजौहैं ॥ लाल हँसि ढुहि खीँचि रही ललना पिय कोँ तकि के तिरछोहैं । पोँछि कपोल अँगोछति औठ अमेठति आँखिन ऐंठति भौहैं ॥ ४१ ॥

प्रौढ़ा लक्षण –दोहा ।

कामकेलि मे अतिचतुर पिय संग रतिसोँ प्रीति ।
सोई प्रौढ़ा नाइका है जाकी यह रीति ॥४२॥

यथा ।

कान्ह अलिंगन आसन चुम्बन कीने अनेक सो कौन गनावै । योँ रति-माने तियाकोँ तउ पति की छतियां छिनु छोड़ी न भावै ॥ भोर भयो पिय जानै न जासोँ दूती पर ए चतुराई चलावै । आँचर सोँ ढकि मोती के माल की सुन्दर सीतलताई दुरावै ॥ ४३ ॥

प्रौढ़ा सुरतान्त ।

रस रंग भरे अँग संग प्रियापिय सोइ गये सुख दै सुख लै । ढुहि कोउ जगे हरिबू उमरी अँमिया पर दोठि गई परिकै ॥ कुच ऊपर देख्यो

नखच्छत सुन्दर भाठ को आँकु सो ऐसो लसै। मनहू मनमत्थ को हाथी चढ्यो है महाउत ओवन आँकुस लै ॥ ४४ ॥

सोवतही रति केलि किये पति संग प्रिया अतिही सुख पायें। देखि सुरूप सखी सब सुंदर रीझि रही ठगि सी टक लायें॥ कंचुकि स्याम सजै कुच ऊपर छूटी लटैं लपटी छबि छायें। बैठ्यो है ओढ़ि मनो गजखाल महेस भुजंगनि अंग लगायें॥ ४५ ॥

अथ बिपरीत रति बर्णन।

बिपरीत रचौ रति राजिवनैन यों राधिका राजति ता पल मैं। दृग रंग भरे अलकैं बिथुरी मुसुक्यात लसैं मुकुता गल मैं ॥ कवि सुन्दर झाँई दुहू कुच की झलकैं हरि के यों उर स्थल मैं। छतियाँ तर तुंबनि दै मकरध्वज मानो तरै जमुनाजल मैं ॥ ४६ ॥

अथ धीरादि—दोहरा।

मध्या प्रौढ़ा मान करैं जब तब ये गुन लखिलीजै।
धीरा एक अधीरा दूजी धीराऽधीरा तीजी॥४७॥

अथ धीरा लक्षण ।

कीनहु एक रमूज मिष निज रिस देइ जनाइ ।
धीरा को लच्छन यहै कहैं महाकबिराइ ॥४८॥

मध्या धीरा लक्षण ।

मध्या धीरा नाइका है ताकी यह रीति ।
जाके बचनन मै कछू रिस की होइ प्रतीति ॥

यथा कवित्त ।

आये हौ मेरे मया करि मोहन मोकों तो मानों महानिधि टूटी । आजु को बानक देखत सुंदर साज मिलै तिय होइ जो रूठी ॥ कैसी बिराजति नीकी नई कर की अँगुरी मै अनूप अँगूठी । प्यारे कह्यो हँसि प्यारी सों यों तब तेरी सौं तें समुझी सब झूठी ॥ ५० ॥

मध्या अधीरा दोहा ।

बोलै बोल कठोर अति आन न कोप दुराइ ।
मध्याऽधीरा कहत हैं ताहि महाकबिराइ॥५१॥

कवित्त ।

सांझ परों बछरानि चराइके आइके बाहिर को फिरि भागे । कालि गये चलि बाहि

गली यह सुन्दर आये बनाइ के बागे ॥ आजु तो लोचन ऐसे हैं लालन मानो मजीठ के रंग मैं पागे । लाज तजी डर डारि दियो तुम तो अब बाके दुआरहि लागे ॥ ५२ ॥

अथ मध्याधीरा अधीरा दोहा ।

कछुक दुरै उघरै कछू प्रगट करै जो मान ।
धीराऽधीरा तीसरी सुन्दर ताहि बखान ॥५३॥

यथा ।

उठि आदर कीन्हों प्रिया पिय आये उनींदे कहूं रति के सुखतें । चख मारि न भौंह मरोरी कहूं न जनायो कहूं रसना रुखतें ॥ चित के ढिग दै दृग भीतरी ओर को सुन्दर अन्तर के दुखतें । अँखिया भरि बात कछू सखि सौं कहिबे कौं भई न कही मुखतें ॥ ५४ ॥

अथ प्रौढ़ाधीरा दोहा ।

काहू मिस करि कोपको कामिनि करै प्रकासु ।
रति कौं रूखी ह्वै रहै कहि प्रौढ़ा धीरा सु ॥५५॥

यथा ।

आवतहीं आदर सौं उठि आइ आगे लये

मीठो बोलि सुन्दर जनायो नेह जिय सों । लै सेज बिठारे पुनि आपुन उमरि बैठी तहां कह्यो लाल आउ लागि मेरे हिय सों ॥ यह सुनि भौंहनि चढ़ाइ मतराइ नैन कछू मिस वालि खीझि काहू एक तिय सों । तब जाइ जानो पासबारी जब मुसकानी नाहीं सखि सों रिसानी रिसानी है पिय सों ॥ ५६ ॥

अथ प्रौढ़ा अधीरा ।

सापराध पियकों निरखि जाकै अतिरिस होइ । खिझि कै देइ उराहनो प्रौढ़ अधीरा सोइ॥५७॥

यथा ।

ढिग बैठिये सुंदर बैठहिगी जिनकी निमि नेहन सों फँसिये । बतियां सुनि, हौं बतियानहि कों छतियां लगि औरन के बसिये॥ हँसि मोसों कहा हँसि लैहो कहा हँसि आये जहाँ हो तहाँ हँसिये । रिझवारिनि तूं रिझवारि वहै जु रिझावति है तुम से रसिये ॥ ५८ ॥

अलसात जम्हात लगे नख गात छिते तुत-

रात हैं बीततहूं । कवि सुंदर औ उलटेइ सुनो इतने पर मोंह करैं अजहूं ॥ तिन सोंऽब कहा कहिये जिनकी सपनेहूं न लाज भई कबहूं । जग में सबि औषधि है सब की पै सुभाव की औषध नाहि कहूं ॥ ५८ ॥

अथ प्रौढ़ाधीराऽधीरा लक्षण – दोहा ।

धीरज धरै अधीरजहिं करै जु पिय सों मान ।
प्रौढ़ा धीराऽधीर सों सुंदर ताहि बखान ॥६०॥

कवित्त ।

अबये कहूं रति मानि बिहारी निहारि कै प्यारी कछू न कह्या है । बैठि रही ढिग मोरे नहीं दृग धीरज सुंदर गाढ़ा गह्या है ॥ कान्ह धर्यो कर कामिनि के उर आंसुनि को परवाह बह्यो है । ऊंची उसास लै बोली है यों हमसों तुमसों रस कौन रह्यो है ॥ ६१ ॥

अथ ज्येष्ठाकनिष्ठा लक्षण – दोहा ।

जासों पति अति हितु करै सुतिय ज्येषठा आहि ।
जासों घटि हित नाह कौं कहैं कनिष्ठा ताहि ॥

अगिलो पछिलो व्याह अरु नाहीं बैस विचारु ।
प्यारेही के प्यार पर है सब यह व्यवहार ॥६३॥

यथा - कवित्त ।

आपुस मै मन्दिर मै बैठी सौति दोऊ रमैं तिहि समै आय कान्ह येई बोल कहे हैं । एक सो कह्यो कै आगे आउ आखिमूंदो खिलैं याही मिसि वाको तोऽत्रआंखि मूंदि रहे हैं ॥ दीलो और सुन्दर पकरि अंकभरि वाके अधर कों पान करि गाढ कुच गहे हैं । आली हौं अचंभे रही लाल के ये ख्याल देखि दैया इनि बातनि कों वैसे बन वहे हैं ॥ ६४ ॥

अथ परकीया लक्षण—दोहा ।

दुरे दुरे पर पुरुषसों सुंदर करै जु प्रीति ।
बुद्धि चतुरई बहुत यह परकीया की रीति॥६५॥

कवित्त ।

बैन कहे सुने कौन चैन पावे सुंदर ज्यों नेकही के निरखत नैन हरियतु है । दौरानी-जठानी सासुनन्द बसे आस पास त्रासनि तैं

ऊँचे न उसास भरियतु है ॥ बैठे भौन कौन मै कही है बात एक तुम कहैंगी वै कान्ह के बखानि करियतु है । अबहीं चवाउ चलि जैहै चुप रहो माई गोकुल में फूंकि फूंकि पांउ धरियतु है । ६६ ॥

परकीया भेद दोहा ।

गुप्तविदग्धा लच्छिता कुलटा मुदिता मानि ।
अरु अनुसयना नारि सब परकीया ए जानि॥६७॥

गुप्तायथा ।

भयो होतु है होइगो सुरत जु तीन प्रकार ।
जु दुरावै गुप्तासु अरु सुरतगोपना नारि ।

कबित्त ।

सारो सुवानि पढ़ावन कों सबको मन मोहिं को ठेलि पठैये । पास गये पिंजरानि के सुंदर कौतुक होत सो काहि दिखैये ॥ भोरे अनार के बीजनि के मेरे मानिक मोतिन कों मुह नैये । तीछन चोंच के चोटनि सों तन चोंथई लेत जबै ढिग जैये ॥ ६८ ॥ *

---

* इसी प्रकार अन्यगुप्ता भी जानिये ।

अथ विदग्धा ।

वाही विदग्धा नाइका ताको दुविध विवेक ॥
वाक्यविदग्धा एक है क्रियाविदग्धा एक ॥७०॥

वाग्विदग्धा यथा ।

सुंदर जानि कै मंदिर के पिछवारे हैं सुंदर ठाढ़े कन्हाई । चाहै कछू कह्यो पै सकुचै तब कीनो है बातहिं में चतुराई ॥ पूछि परोसिन कों मिसु कै उत वाही में पीकों सहेट बताई । साथ चलोगी हौं कालि को जाउंगी देवी के द्योहरे पूजन माई ॥ ७१ ॥

क्रियाविदग्धा यथा ।

जाति हो बाल अलीन में लाल को पीछे सुबोल सुन्यो अनुरागी । क्यौं लखिये लखि जाहि सखी लखिवेहि की लालच के रस पागी ॥ छोड़ि दई सब साथ की सुंदरि यौं डगरी डग द्वै करि आगो । फेरि कै नार कह्यो अलीगनि सों टेरन के मिसि हेरन लागी ॥ ७२ ॥

अथ कवित्त ।

जाहि मीतसों प्रीत अति लखै सखी पुनि ताहि ।
कवि सुंदर नारीन में कहैं लक्षिता वाहि ॥७३॥

यथा ।

प्रीति भई भली भई बाढ़ो नित नई नई हमसों दुराव दई काहे को करति है । हितुन को होत सुख हितु की सुने तें बात तिनहू तें सुंदर रुखाई क्यों धरति है ॥ एकुतनु एकु मनु एक जीव एक प्रान आपुस मे दोउन की एक सी अरति है । पूछति हौं कान्हजब कैसो कहा कौन कब अनजाने कैसी होय औझकि परति है ॥

अथ कुलटा - दोहा ।

निसदिन जाको रतिकथा सदा काम सों काम ।
मीत अनेकनि सो रमै कुलटा ताको नाम॥७५॥

यथा ।

अंचल डारे रहै अलबेली दृगंचल चंचल है चपला तें । सुंदर नैन को सैननहीं मैं अनेक अनागल आनति घातें ॥ बैठि झरोखनि

मांझ उहां, उझकै दुरिकै मुरिकै मुसुकातैं ।
तौही लौं औचक परै काल जौलौं चलै कछु काम
कलोल की बातैं ॥ ७६ ॥

अथ मुदिता—दोहा ।

सुनत भावती बात के फूलै जाको गात ।
ताकौं मुदिता कहत हैं जे कविता सरसात ॥

कवित्त ।

लोग बराति गये सिगरे हम रातिजगे को चली सब कोऊ । सुंदर मन्दिर सूनो यहां अब को रखवारो है ताहि न जोऊ ॥ सासु कही तबही लखि यौं लहुरी दुलही घरही यह सोऊ। फूलि गये सुनि बात यौं गात समात न कंचुकी मै कुच दोऊ ॥ ७८ ॥

अथानुसयना भेद—दोहा ।

कहत अनूसयना त्रिविधि तहां एक यह भेद ।
बिनसत ठौर सहेट की जिय मै पावै खेद ॥ ८० ॥

यथा ।

बैठी है कुंज की सुंदर फूल बिराजत पात

कढ़ाक अयो सो। यामै ता आवति पावतिही पति की रति केलि को रंग भयो सो ॥ आई बसन्त बयारि बहै अब तो यह देखिये गो उगल्यो सो। सोचति यों पुनि पात भयो मुख ह्वै गयो प्यारी को पात भयो सों ॥ ८१ ॥

दूजी अनुसयना—दोहरा।

यों सोचति संकेत ठौर को आगे होय न होय।
दूजो भेद अनुसयना को यह जानै सब कोय ॥

यथा—सवैया।

सासुरे को चली बाहिरो बाग बिलोकतही अँखियां भरि आई। जानतिहो जु सखी जिय की तिन कान मे आनि तिहीं समुझाई ॥ देखि बिना पहिलेही भली रति केलि के ठाहर को पछिताई। जाति जहां हौं तहां पुनि सुंदर मन्दिर सूनै घनी अमराई ॥ ८२ ॥

तीजो अनुसयना—दोहरा।

पिय आवै संकेत ठौर तें, तिय अटकार तें जानै।
न गई हौं पछिताइ जु तीजो यों अनुसया बखानै* ॥

---

* यहां दूसरे और चौथे चरण में १२ मात्रा है।

यथा ।

हरि आये अबै सिर फूल धरे अकरैं कर सुंदर कोंप नई । तब नागरि जानी कि बाग मैं ह्वै मुरझाय रही अनुरागमई ॥ पछिताय सुतो मनही मनमांह कहै सुधि काहू न मोहि दई । वह ठौर है खेल को लाल गये री कहा कहिये अलि हौं न गई ॥ ८५ ॥

अथ सामान्या लक्षण—दोहरा ।

ताको सामान्या तिया कहैं महाकविराइ ।
जाकोमनमिलिसबी नरनिसौं धनलीजे उपजाइ॥

यथा—दोहा ।

लटकि मटकि मुसुकाइ मुरिकरै कटाच्छ सिंगार।
बहुद्यामनि को दानि जब आयो देखै द्वार॥८७॥

अथ त्रिधा नायिका ।

अन्यभोगदुखिता सुवक्राक्ति गर्विता आहि ।
मानवती पुनि तीसरी कहैं महाकवि आहि ॥

अथ संभोगदुःखितालक्षण—दोहरा ।

पियरति करीजाय तियसौं ताहिदेखि अनखाइ।
सुवक अन्यसंभोग दुःखिता कहैं महा कविराइ॥

यथा।

बिथुरी अलक नैन रस भरे झलकत झपकात पलक वै औरै छबि छाई है। पटलि बदलि गये भूषन सकल कहीं सुंदर अधर मै न धरति ललाई है॥ जगर मगर जोति ऐसी अंग अंग होति कंचन की छरी मानो आगि मैं तपाई है। मै तो ही पठाई सुधि लेन वा कन्हाई की सु दूती दुखदाई देख जैसी होय आई है॥

दोहा।

कहुं वक्रोकति गर्विता ताको दुविध विवेक।
प्रेमगर्बिता एक है रूपगर्विता एक ॥ ९१ ॥
जाके पिय की प्रीति को जिय में होइ गुमान।
प्रेमगर्बिता नारि को सुंदर यहै बखान ॥९२॥

प्रेमगर्बिता— यथा।

तिय तेरोई कन्त भलो जो निरन्तर भूषन तेरे बनावतु है। हम कों तो हमारे है प्रीतम को पन ऐसो जहीं ढिंग आवतु है। जब सुंदर है गहनौं पहिरौं तब यौं कहि कै उतरावतु

है । तुव मूरति सों मेरे नैननि को छतनोउ न अघात भावतु है ॥ ८३ ॥

रूपगर्विता लक्षण—दोहा ।

अपने तन के रूप पर जो नारी गरवाइ ।
रूपगर्विता नाइका ताहि कहैं कविराइ ॥८४॥

यथा ।

आनन हमारे के तमासे सुनि सुंदर यों चुंबन करत कान्ह क्यौंहू न अघात हैं । निरखि निरखि आंखि दूनो दूनो ललचात चाहत चकोरनि के लोचन लुभातु हैं ॥ और सुनो कमल के भोरे भौंर दौरत हैं बैठिबे कों आस पास आनि मंडरातु हैं । काटैं मति अधरनि या डर तें मेरो आली तिनहिं बिडारत सु हाथ रहि जातु हैं ॥ ८५ ॥

अथ मान वर्णन ।

पिय अपराधी जानि तिय रूठै लखी होइ ।
ता समये के रूप कों मान कहैं सब कोइ ॥८६॥
लघु मध्यम गुरु कहत हैं तीन भांति को मानु ।
ज्यौं उपजे जैसे मिटै त्यौं सब करौं बखानु ॥

अथ लघुमान—दोहा ।

और नारितन देखतहिं पिय को जो अनखाइ ।
यौं उपजै लघुमान कछु छ्याजहि मैं मिटि जाइ ॥

यथा—सवैया ।

पिय देखत देखें ज्यों और तिया दृग त्यौंर तिया को तहीं बदले । हरि जान्यो कि मानवती है भई बुधि भांति मनावन को बिरले ॥ कहि सुंदर चातुरी सों कियो गान पै आनि कै तान मैं चूकि चले । न रह्यो गयो बोलि उठी तजि मान कह्यो हँसि सीखि भले जू भले ॥६६॥

अथ मध्यम मान—दोहरा ।

और नारि को नाउं लैकै बातैं करै सुजानु ।
यौंसुनिकोउतियातकिमानिनिसोकहिमध्यममानु

यथा - सवैया ।

बैठे हे पीउ पिया पलिका कछु काम कथानि को भेद उचाह्यो । सुंदर मोहन जू मुखतें इक नागरि नारि को नांउ निकाह्यो ॥ प्यारी दई सतराइ करोटु तबोनु को भाउ तबा जु

निहारयो । मान के भार भयो अटक्यो रथ मा-न्यो मनोभव को भर भारयो ॥ १ ॥

बात करत को मान यथा—सवैया ।

आये मुरारि उठी कहि नारि क्यों मोसों मिलावत हो मुहँ को अब । जानों हो बानति नाहिने वासों हे बातनि कौनि मैं आहु जुरे अब ॥ प्यारी सों प्यारे कह्यो करजोरि के तेरी सौं तेरी सी पूछति हैं सब । सुंदर सौंह के बोलन यों ततकालही मान तज्यो तरुनी तब ॥२॥

अथ गुरुमान – दोहा ।

पियआवै रतिचिन्हकरि तियलखिकीन्ह रिसाइ ।
उपजत है गुरुमान तहँ छूटै पकरे पांइ ॥ ३ ॥

लाल के भाल लग्यो लखि जावक पावक से भये नैन प्रिया के । नाह निहारि निहोरन लागे नये दृग नेक तजे न तिया के ॥ सुंदर पाहुन प्यारो भयो ज्यों गयो बढ़ि ऐसे हुलास हिया के । फूलि गयो मनु भूलि गई रिस छूटि के बन्द गये अँगिया के ॥ ४ ॥

अथ अष्टनायका वर्णन · दोहा ।

उत्तम मध्यम अधम अरु दिव्यादिव्य बिबेक ।
ऐसे बरनत नाइका बाढ़ै ग्रन्थ अनेक ॥ ५ ॥
यातें यह संक्षेप सों सुंदर कियो बिचारु ।
बरनत आठौ नाइका सिगरे रस को सारु ॥६॥
प्रोषितपतिका खंडिता कलहंतरिता नाम ।
बिप्रलब्ध उत्कंठिता बासकसज्जा बाम ॥ ७ ॥
स्वाधिनपतिका नाइका अभिसारिका गनाइ ।
आठ प्रकार जु भेद यह कहै महा कबिराइ ॥

अथ प्रोषित लक्षण - दोहा ।

जाको कंत बिदेस को गमन कियो जो होइ ।
पियबिनव्याकुल तियजुतव प्रोषितपतिका सोइ॥
प्रोषितपतिका नारि को रीति कहैं कबिराइ ।
दसौं अवस्था देह में व्यापत जाके आइ ॥१०।
मुग्धाप्रोषितपतिका को बिरह न परगट होतु।
ज्यौं घटमधि के दीप कौं भीतरही उद्यातु ॥

मुग्धा प्रोषित — यथा ।

परदेस कों लाल चले कहिँ हाल है बालकों

कालिहि के बिछुरे। मनही मन खेदु न दीजिये भेद कराहि के तेल लौं हीय चुरे ॥ अँसुवा भरि आवत है बरुनी लौं सकोच तें भीतर कौं यों मुरे। कुलवंतो की जैसे कटाच्छ चलैं चलि कै पै दृगंचलही मै दुरे ॥ १२ ॥

अथ मध्याप्रोषित—कवित्त।

सुंदर हौं गई वृषभान के विलोकि आई बैरिन कौं बाढ़ी बिथा बिरह बलाय की। भूलि जात खान पान रूपरंग आन आन मानस को चेतना न होत चित चाय की ॥ काल्हकौं चले हैं कान्ह मथुरा कौं माई आजु ऐसी गति भई दई राधिका के काय की। बोलनि है मौंसी अवलोकनि लजौंली कैसी ह्वै गई है ढीली पग जेहरि जराय की ॥ १३ ॥

अथ प्रौढ़ाप्रोषितपतिका—सवैया।

प्रीतम गौनु किधौं जिय गौनु कि भौनु कि भाक भयानकु भारो। पावस आवकु फूल कि सूल पुरंदर चाप कि सुंदर बारो ॥ सौरी

बयारि किधौं तरवारि है बारि दवारि कि बान बिसारो। चातक बोल कि चोट चुभै चित इंद्रबधू कि चकोर को चारो ॥ १४ ॥

अन्यच्च—कवित्त।

ऊधो जू सँदेसो नाहि कह्यो जाइ कहा कहैं जैसी करी कान्ह तैसी कोऊ न करतु है। औधि तो हमारे एक कहां लगि कहौ परै जीमें जितो कहौं तितो क्योंहू ना सरतु है॥ द्वारिका बसतु हरि सुंदर समुद्रही मै इही पर बाइ बाइ सिंधु मै परतु है। जानि है वे जमुना के जलही तें जाको ज्वाल जलधि में पर्यो बड़वानल जरतु है ॥ १५ ॥

अथ परकिया प्रोषितपतिका लक्षण–दोहरा।

सीतचल्यो परदेसबिरह को, बात जु बाल दुरावै।
सो परकीया प्रोषितपतिका सुंदरनारि कहावै॥

यथा—सवैया।

सीजतु है भरि ऊँचे उसास तो आवत हैं उरते न उरे। भीतरी ओर के नैननि के अँसुवा

पुनि नीचेहि कों निचुरे ॥ सुंदर चाहति बात
कह्यो अखरा मुख तें मुखही कों मुरे । दीन
दयाल चले दै इतो दुख देखत ऐसे दुरेई दुरे ॥

सामान्या प्रोषितपतिका—दोहरा ।

बिछुरे पीतम दाम लैन कों गौं सो बिरह जनावै ।
नगरनाइका प्रोषितपतिका सो वह नारि कहावै ।

यथा - दोहा ।

गनिका बिछुरे कन्त के मिसुकरि दृग भरि लेइ ।
प्रेम जनावै या लिये ज्यों आये धन देइ ॥१९॥

अथ खण्डिता - दोहा ।

अनत मानि पति रति कहूं आवै जाके धाम ।
देखि चिन्ह अनखाइ तब सुकहु खण्डिता बाम ॥
रीति खण्डिता नारि की कहैं महाकबिराइ ।
रूठि रहै चिन्ता करै चुप ह्वै रहै रिसाइ ॥२०॥

सवैया ।

नाह की छाती मे देखि नखच्छत नारि
नबोढ़ कह्यो पुनि ऐसें । सुन्दर बागें की चोलो
में भूलि कै ल्याये हो चन्दकला धरि कैसें ॥

खेलिबे कों हमकों यह देहु जु यों सुनिकै हरि दौरे हरैसें । लाइ लई उर मों हँसि यों गसि दोऊ रहे कसि राखिये जैसें ॥ २२ ॥

मध्या खण्डिता—सवैया ।

आये कहूं रति मानि कै मोहन भूषन भेद सबै बदले हैं । यों पिय कों तकि रूप तिया तऊ बोली कछू न बुरो कि भले हैं ॥ आँखिन बीच तें आंसू गिरे कहि सुन्दर काजर सो मलै हैं । सो छवि यों अरविन्दन तें अलि के मनो चेटुवा छूटि चले हैं ॥ २३ ॥

प्रौढ़ाखण्डिता—कवित्त ।

कानन कानन तुम डोलत सुजान कान्ह आनन की आभा आनि भांति पेखियतु है । बिन गुन माल उर धरी है गोपाललाल आंखें लाललाल कौने लेखि लेखियतु है ॥ सुन्दर अधर पर पीक की लसति लीक बीच कारे काजर की रेख रेखियतु है । छूते पर कहत हौ देखो तब कहो ए जू और आगि लाय का दिया लै देखियतु है ॥ २४ ॥

जागे कहूं रस पागे कहूं दृग लागे कहूं तुम त्यों अजहूं हो। घात कहूं अरु बात कहूं चलि जात कहूं चितयें कितहूं हो॥ काहे को सुन्दर मोहन खात कहूं हठरात अमात कहूं हो। सांझ कहूं अधरात कहूं पछिरात कहूं भये प्रात कहूं हो॥ २५॥

परकीया खण्डिता—सवैया।

आये कहीं रति मानि कै मोहन मोहनी देखि भई मनछीनी। सुन्दर दोष तुम्हैं न कछू विधि मेरे ललाट मैं यों लिखि दीनी॥ बैर कियो सिगरे जगसौं तुमसौं हित सो तुमहूं यह कीनी। सुन्दरि यों इतनो कहि कै दृढ़ सांस लियो अँखिया भरि लीनी॥ २६॥

सामान्या बनिता खण्डिता—दोहा।

नगरनाइका खण्डिता ताको है यह भात।
रूठे खीझै करिसु कछु लीबेही की घात॥२७॥
पति आये रति अनत करि देखि रिसानी नारि
पकरि हाथ पहुचानि सौं पहुंची लई उतारि॥

कलहन्तरिता लक्षण दोहा ।

पहिले पतिसों रिस करै फिरि पाछे पछिताइ ।
कलहन्तरिता नाइका कहैं महाकविराइ ॥२९॥
कलहन्तरिता नारि को रीति यहै भ्रम ताप ।
ऊँचो लेइ उसास भरि इन्द्री विकल प्रलाप ॥३०॥

मुग्धा कलहन्तरिता कवित्त ।

लखि लाल लजाइ रही ललना कहि सुन्दर बैठि अलीगन मैं । हरि हारे बुलाइ न बोली जबै तब वेऊ गये उठि कै बन मैं ॥ करतै इतनी तो करी पहिले पुनि कैसी तची है तिया तनमैं । कहि के न सकै सखिहूं सों कछू पछिताति महा मनही मन मैं ॥ ३१ ॥

मध्या कलहन्तरिता यथा ।

आये जांदोराइ दोऊ लोचन रहे लजाइ कह्यो समझाइ मैं न मान्यो तिहि छिन है । फिरि गये पति हौं तो पछिताति इहि राति रतिपति सुन्दर तचाया तनु तिन है ॥ कहा कहूं आलो कछु कहिबे की नाहीं जैसी लाल

काम दुहूं मिलि मोको करी दून है। बोल्योहु न जात अनबोलेहु न रह्यो जात बोलै अनबोलै दुहूं भांतिन कठिन है॥ ३२॥

प्रौढ़ा कलहन्तरिता—यथा।

सौंहैं करी कोरि कोरि सुन्दर कितो निहोरि ठाढ़े भये हाथ जोरि जैसें होत चेरो है। कैसी २ भांतिन मनाइ हारे मोहन जू मान्यो नहिं हिया भया काठ तें करेरो है॥ फिरिगये पीउ जब तरमन लाग्यो तब महादुख पाइ अब सोचत घनेरो है। पहिले तो तैसो भयो कैसो है अनैसो यह नीअ लगे ऐसो हिये जैसो हिय मेरो है॥ ३३॥

परकीया यथा।

नित ठान्यो अठान जिठानिन सो पुनि सासु को कीतो रिसाइ सही। हनतूल गनी सब सौतिन को ननदी को अदीन ह्वै दाह दही॥ इतनो कियो जाके लिये हम सुंदर ताहू सों आजु हों रूसि रही। सखि सोचत हौं तब

की चित मै बिधि की गति जाति कछू न कही ॥ ३४ ॥

सामान्या लक्षण—दोहा ।

मीतदानि बहुद्रव्य को रिसि करिदियो रिसाइ।
जात रह्यो पछितात पुनि न लई माल छुड़ाइ॥

विप्रलब्धा लक्षण – दोहा ।

पहुंचे ठौर महेट को पियहि न पावै नारि ।
ताहि विप्रलब्धा कहैं पण्डित लोग विचारि ॥
रीति बिप्रलब्धानि को आंसू ऊँची सांस ।
देइ सखीन उराहनो चिन्ता बिकल उदास ॥

मुग्धा विप्रलब्धा—सवैया ।

सोहनि कै नवला को सखी बन को बहकाइ लिवाइ गई है । कुंज की देहरी ठाढ़ी करी लै ढकेलि कै भीतर ठेलि दई है ॥ कुंज बिहारी निहारे उहां न तहीं वह चौंकि चकी चितई है । सुंदर देख्यो सखी तन ऐसें जू पांखिनहौ मैं मरोस भई है ॥ ३८ ॥

अथ मुग्धा विप्रलब्धा कवित्त।

घटा घहराति बीजुरी न ठहराति उठि आई है हरबराति ऐसे मेघ झर मैं। काम की चपेट लिये लाज को लपेट तहां हरि सौं न भई भेट ह्यां सपेट घर मैं॥ जकी सी रही है तकि सुंदर अचंभो अति हली न चली न बूझि गई सोच सर मैं। आधी आधी आखिन सौं आला-कति आलीतन आधी बात आनन मैं आधि-का अधर मैं॥ ३९॥

अथ प्रौढ़ाविप्रलब्धा. – सवैया।

उठि आई ही देखन कौं पिय पास बनाव बन्यो सुनि कै घर को। कहि सुंदर भीतर जाय जो देखै तौ खोजु नहीं कहुं काम्हर को॥ छुहि बीच तो बान कमान गहे करतानि उठ्यो अरि संबर को। जब जान्यो बचाउ न क्योंहूं सखी तब ध्यान धर्यो हिय मै हर को॥ ४०॥

अथ परकीया विप्रलब्धा – सवैया।

अति आनन्द सो उठि आई प्रिया पिय

देख्यो न भीतर कुंजनि है । तिय लेत उसास बिदा ह्वै चली अलि सों कहि कै दुनि बातनि है ॥ कहि सुंदर तोसों कहा लरिये जिन ऐसी करी सखि तू धनि है । सिसु आजु तो मोसी कै न्योते की हो फिरि ऐसो बनाव नहीं बनि- है ॥ ४१ ॥

अथ सामान्या विप्रलब्धा—दोहा ।

करि सिंगार बनि ठनि बहुत गई मीत के गेह ।
मिल्यो न पिय पायो न धन याते व्याकुल देह ॥

अथ उत्का लक्षण—दोहा ।

काहे तें आयो नहीं पिय सहेट कै थान ।
यौं चिंता जु करै सुतिय उत्का जानु सुजान ॥
कांपैं रोवैं तन तपैं अति अंगिराइँ जँभाइँ ।
कौति यहै उत्कानि की सखि सौं कहैं सुभाइ ॥

मुग्ध उत्का—यथा ।

काहे ते न आये कान्ह काहू कामिनी ने काहू काम की कलोलनि मैं राख्यो किधौं घोरि है । सोचति यौं मनही मैं सुंदरि नवल नारि

कैसेहूंधौं विधि आजु कंत को वशोरि है ॥ ऊंचे न उसास ले सके न ऊंचे देखि सकै पूछे कौ सखी सौं ऐसी कुहा लौं लजोरि है। सब की बचाइ डीठि आतुरी सौं पीरि तन नैननि की कोरनि सौं चितई मरोरि है ॥ ४५ ॥

अथ मध्याउत्का यथा—सवैया।

बातनि मीतनि सौं अटक्यो कि मिली तिय कोउ रह्यो रमि ताही। और तो बूक न सुंदर वा दिन मै कछु ओठनि लागी है स्याही ॥ आयो नहीं सखि बूझिये कैसी कहा मन देत है तेरो गवाही। चोप घटी कि मिटी चित चाउ कि आलस नींद कि वेपरवाही ॥ ४६ ॥

अथ प्रौढ़ा उत्का यथा—कवित्त।

खिलत मखानि साथ गये रहि ब्रजनाथ कि धौं और नारी हाथ कहूं कोउ परी है। छांतो खींचो हित किधौं गान माहि बूड्यो चित सुंदर कवित्त माहि कछु जी मैं धरी है ॥ असगुन भयो किधौं कछू और ठाठ ठयो किधौं काहू

मतो नयो है के मति हरो है । और बार आवतै सवार मेरे वास माहि आजु धौं अवार क्यौं कुमार कान्ह लागी है ॥ ४७ ॥

अथ परकीया उत्का—सवैया ।

सकुची न सखीन सौं सौतिन सौं सपनेहु न सासु की कानि कहूं । कुलआनि की तीयनि सौं केहु भांति डराए ते हौं न डरी कबहूं ॥ कवि सुंदर नंदकुमार बिना तन कौ तनकौ नहि चैन कहूं । हरि के हित मैं तो करी इतनी हरि कौनो जु आये नहीं अजहूं ॥ ४८ ॥

अथ सामान्या उत्का यथा—दोहा ।

काहू कौं धन दै बहुत बंस ह्वै बस्यो विचित्र ।
जानति हौं आयौ नहीं यातें अजहूं मित्र ॥

अथ वासकसज्जा लक्षण—दोहा ।

निहचै मेरी सेज परि पिय आवैगो आजु ।
वासकसज्जा जानि जा सजै सुरति को साजु ॥
पियमग लखि सखि सो हँसैं पूछैं सजैं सिंगारु ।
ये वासकसज्जानि के कहु सुंदर व्योहारु ॥५१॥

मुग्धा वासकसज्जा—सवैया ।

भौन के कोन तें भीतर आइ के बैठि सिंगार को साज बनायो । सुंदर सीस को फूल दयो सिर मानो मनोज को छत्र तनायो ॥ देखति है दुरि द्वारि की ओर न काहू सखीहू सो भेद जनायो । देखि चरित्र नवोढ़ के मैनहूं आपुन को अति धन्य गनायो ॥ ५२ ॥

अथ मध्यावासकसज्जा—कवित्त ।

अबहीं ते उबटि अन्हाइ बैठी पाटी पारि आंखें आंजि एड़ी मांजि पूरि कै सुहागु है । अगर मगर होत आभूषन सब तन सुंदर ज्यों फूलत बसंत बीच बागु है ॥ देखति है कहा मुसुक्याइ तेरो जानति हौं पीतम सों सुरत सों अति अनुराग है । अथयो न सूर, सांझ परो न जगाये दीप तेरे तो री माई इहां पूनो तें फागु है ॥ ५३ ॥

अथ प्रौढ़ा वासकसज्जा—सवैया ।

बैठी सिंगार के गेह में यों अनुराग दिये दुति ज्यों नग में । सेज सजी सिरफूल तें लै

कै अराइ की औसरि लौं पग मैं ॥ लागि रहे दृग द्वार की ओर लखे कवि सुंदर या ढँग मैं। आवहिंगे पिय जानि तिया यौं बिछाये हैं कंज मनो मग मैं ॥ ५४ ॥

अथ परकीया वासकसज्जा—कवित्त।

दौरानी जिठानी सासु ननद सुआइ सब सुंदर कहानी कहि कैयक करनि सौं। सारिका सुवानिहूं कै पींजरा उसारि धरे मिसुकै निकासी दासी बाहिर घरनि सौं॥ दियो अंचराई कै अंध्यारी कै दुराइ पुनि पौढ़ि रही आइ चुप चाइ के डरनि सौं। आयो पिय एही आस पलिका के आस पास दाबें निज सांस टकटोरति करनि सौं ॥ ५५ ॥

अथ सामान्या वासकसज्जा—दोहा।

पिय पै कंचन लेउंगी माला सुंदर हार।
यहै मनोरथ राखि हिय साजे सकल सिंगार॥

अथ स्वाधीनपतिका लक्षण - छन्द।

अतिबस भयो रहै पति जाकै सदा सुचित

की प्यारी। सबबिधि साजै सनोरथ सिगरी छिन भरि होत न न्यारी ॥ ताहि कहैं स्वाधिन प-तिका तिय छिय की महा रमीली। सेनबाग को राग रंग जेहि भावै बह गरबीली ॥५६॥

मुग्धा स्वाधीनपतिका -- सवैया।

सोवत लेत करोट नवोढ़ को नीचे लटैं पलिका तें परी हैं। देखितही हरि सुंदर दौरि कै जाइ कै नागिन सी पकरी हैं॥ लै दुपटा अपना अपने कर पौंछि कै सेजहि मांझ धरी हैं। प्यारे को प्यार निहारि यों रीझि भई परफुल्ल सखी सियरी हैं॥ ५७॥

अथ मध्यास्वाधीनपतिका - कवित्त।

सखिन में बैठौं जहां ठाढ़े होहिं हठि तहां लाजनि हौं गड़ि जाउं नेकुजन ते टरैं। सेज पर पौढ़ें देह छूत न करोट फेरि राखत लगाइ कहँ सुंदर यरो गरैं॥ तोहि याते पूछति हौं तूं तो सबै जानति है कहिधौं सुभाउ कहा हरि कौं हरै हरैं। मोहन की मंदिर मैं कैसी कैसी

सुंदरी हैं सबनि को छोड़ि ऐसी भांति रहिबो करैं ॥ ५८ ॥

अथ प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका – कवित्त ।

चाहैं चित चांप चाइ लोचन रहैं अघाइ सुंदर छड़ाइ रंगु कंजपुंज को लयो । रही नखुन छविछाइ मानिक तें सरसाइ जेहरि जराइ को अनूप रूप है नयो ॥ चौकी पर बैठी आइ सखिन सों फुरमाइ एड़ी उजराइबे कों ठाठु जबहीं ठयो । देखिये सुभाइ रहे पछिताइ पछिताइ हाइ इन पाइन को झावा क्यों न हों भयो॥५९॥

परकीया स्वाधीनपतिका – कवित्त ।

ऐसो भयो रहै लीन जैसे जल मांहि मीन सुंदर अधीन अति काम के रसनि सों । आलिन में मिलि आली मै हों जब चली कालि लाजनि हौं गड़ि गई याको बिहसनि सों ॥ लाग्यो आइ जहां जाउँ गनै न कुठाउँ ठाउँ एक भांति को है गाउँ डरों औजसनि सों । बोलौं सतराइ तब दौरि गहै आइ पाइ कहि धौं कहा बसाइ ऐसे मानसनि सों ॥ ६० ॥

अथ सामान्या स्वाधीनपतिका—दोहा ।

रूपवती तरुनोनि पुनजाने सकल कलानि ।
ऐसिनिहूं तजि हेतु है धन मोही को पानि ॥

अथाभिसारिका लक्षण—दोहा ।

बोलि पठावे पियहि कों पिय पै आपुहि जाइ ।
सो कामिनि अभिसारिका कहै महा कबिराइ ॥
रीति यहै अभिसारिका समयसमान सिंगार ।
साहस संका चातुरी लयें करे अभिसार ॥६३॥

मुग्धाऽभिसारिका—सवैया ।

पौढ़े हुते पलिका पर प्यौ मुख ऊपर ओट दिये दुपटा को । ल्याई लिवाइ सखी नवला कहँ बातें बनाइ अनेक छटा को ॥ जेहरि को खटको अबही भयो सुन्दर देहरी आनि अटा को । अंग अनंगतरंग उठी बन मोर को ज्यों सुनि घोर घटा को ॥ ६४ ॥

मध्याऽभिसारिका—यथा ।

जौलौं कों न चली तौलौं कैसी करी लला केकी हाहा करि करि आली लेहु मोहि ल्याइ

कै। चाई उठि मन्दिर कौं कोन चौप चाइनि सो दूरी पुनि चाइ ढिग रही चुप लाइ कै ॥ बैठि रही काहा चव गौनाइन कीसी नाइं घूंघट कै सुन्दर सकोच अपनाइ कै। लेइ नहीं हिय कि हुलास सब पूरे करि पीतम कौं अधर पियूष रस प्याइ कै ॥ ६५ ॥

प्रौढ़ाऽभिसारिका — यथा।

पहिले तो भयो यह कैसो उदो कहि सुन्दर मन्दिर के चहुंओरनि। पुनि आगेहू आय रही समुहाहि रह्यो भरि गेह सुगन्ध झकोरनि ॥ बिछिया घुघुरू झमकै लहँगा की सुनी त्यों तहीं मधुरी घमकोरनि। मुसुकाति पै आपुहि चाइ गई है जिवाइ लिये तिरछी दृग कोरनि ॥६६॥

परकीयाऽभिसारिका — सवैया।

स्याम को ल्याई सनेसो सखी सुनि कै तन सुन्दरि कै रस बाढ़े। चौंधि के भूषन खोलि धरे बिछियान के बैन दै काँकर काढ़े ॥ चूनरि की धरि झोरी बसी चँगियाहू के बन्द बसी

गहि गाढ़े । आइ रही मुलही वह प्यारी बड़ी हरि हेरत है मग ठाढ़े ॥ ६७ ॥

पी पें चली बिछियानि के बाँकर काढ़ि कै बौंधि कै भूषन छोरे । को सुख देइ जो काहू सों पूछों सखी तें मिलौं जिनके मन भोरे ॥ जाति कहां हो लगाये कहा सुधि यों जब पूछि-हैं नैन मरोरे । सुन्दर एइ परोसिनि सों कहि देहिंगी टौरि सुगन्ध के डोरे ॥ ६८ ॥

दिवाऽभिसारिका—यथा ।

आए पाइ गुपाल को ग्वाल गली मधि आइ कै धाइ लियो है । बातनि ऐसें गये जुरि के न गन्यो तहँ मानस कोउ बियो है ॥ सुन्दर हौं तो रही चकि सी तकि दम्पति को अति गाढ़ो हियो है । चाहिये राति किये दुरि यों सुदुहू मिलि कै दिनही में कियो है ॥ ६९ ॥

सन्ध्याऽभिसारिका—कवित्त ।

कारी घनघटा भारो पहिरि कै कारी सारी आंखिन में देखि तेरे कारी कजराई है । का-

रोई कुरंगसार घसिकै लगाउ अंग कारे चोवा कांचुकी सुभलेही भिंगाई है ॥ कारे पाट सुन्दर गुहाये सब आभूषन कारी बेनी पीठि पर छोरि दै सुहाई है। ऐसे समै ऐसी होइ आइ मिलि कान्हर सों आजुही तो सिगरी कराई काजु आई है ॥ ७० ॥

चन्द्राऽभिसारिका—कवित्त।

फूलनि सों गुही मांग चंदन चढ़ाये अंग उमड़ो है मनो गंग सरद के नीर को। सोहत हैं सब तन मोतिन के आभूषन [illegible] की जोति सों मिलो है जोति चीर को ॥ मुसुक्यात आछी अति दांतन की दिपैं दुति तैसीयै गुराई कहि सुंदर सरीर को। चांदनी सी बाल मिलि चांदनी मैं ऐसे चली जैसें छीर सिंधु मै चलै तरंग छीर को ॥ ७१ ॥

सामान्याऽभिसारिका—दोहा।

सुंदर सकल सिंगार सजि चली बाल बुधि पास।
आइ पाउ मनमानतो धन लेहौं पिय पास ॥

अथ द्विर्बद्धंसुबद्धं इति न्यायेन पुनः कथनं
दार्ढ्यार्थं स्मरणार्थं वा । दोहा ।

सुन्दर मुग्धा नारि कों लज्जा को अधिकार ।
लाज काम दुन दुहुन मिलि मध्याको विस्तार ॥
सो प्रौढ़ा जा नारि में रस को बहुत विकासु ।
जो तिय धीरज धरि रहै कहियत है धीरा सु ॥
जो नारी विनु धीरजहि कहैं अधीरा नाम ।
धीरज धरै अधीरजहि धीराधीरा बाम ॥ ७५ ॥
तिय सुज्येष्ठा अधिक हित सुकनिष्ठा लघु जासु ।
परकीया की सरसई होत न कछू प्रकासु॥७६॥
सामान्या तिय को अहै केवल धन सों काज ।
इहि विधि भेद तियान के कहैं महाकविराज ॥
अष्टनाइका ज्यों कही त्यों नवमी पुनि होइ ।
जाको पीय बिदेस कों चलन चहै तिय सोइ ॥
चाहै चलन विदेस कों छन में जाको ईसु ।
होइ प्रवत्स्यतभर्तृका कह सुन्दर नारी सु॥७८॥
रीति प्रवत्स्यत्भर्तृका तिय की आंसू स्वास ।
असगुन होइ चलै न पिय करत हिये इहि आस॥

अथ मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका—सवैया।

सुन्दर बालम बात कहूं परदेसनि कों च-
लिबे की चलाई। बानहु तें अति पैनी अचा-
नक सो धुनि बाल के कान मैं आई॥ पूछि
सकै न सखीन सकोचनि बूड़ि गयो पल मैं
जियराई। नीची रही करि जो बहुरों फिरि
ऊँचे कों नारि न नारि उठाई॥ ८१॥

मध्या प्रवत्स्यत्पतिका—सवैया।

भोर भये मथुरा को चलैंगे यों बात चली
हरि नन्दलला की। बोलि सकी न सकोचनि
तें सुनि पीरी भई मुखजोति तिया की॥ हाथ
टिकाइ ललाट सों बैठी हुहै उपमा कवि सु-
न्दर ता की। देखै मनो तिय आयु के आखर
और कछू हैं रहे बच बाकी॥ ८२॥

प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका—सवैया।

यों मुरझानी सुन्यो हरि गौनु तुषारहनी
मनो कंजकली है। सुन्दर सेज सुगन्ध सिंगार
बिसारि मनो छली काहू छली है॥ ह्वै रही

पाहन की पुतरी सी हलाएहुं ते पलमैं न हली है। चाउ न चैन न चेत कहूं अब तें चरचा चलिबे की चली है ॥ ८३ ॥

परकीया प्रवत्स्यतपतिका – सवैया ।

हरि जू मथुरा को चलैंगे घरीक रहैगी जहां पछिली रतियां । वृषभानुसुता बनितान में बैठी अचानक यौंही सुनी बतियां ॥ तिहि बार जो बालमै बीती कछू कवि सुन्दर जानै को आन तियां । तन ताहि को जानत कै मन जानत कै वह जानति है छतियां ॥ ८४ ॥

सामान्या प्रवत्स्यतपतिका – दोहा ।

पीतमु चले बिदेस कों यों बोली पुरनारि ।
छपिहौं तुहि तेरे बिरह माला देहु उतारि ॥

अथ उत्तमा लक्षण – दोहा ।

अहित करै पिय तिय तऊ तजै न पिय की प्रीति
हूह सुउत्तमा नाइका है याको यह रीति ॥

यथा ।

पकरे आरसीं कर और तिया को लिये फिरै ज्यौं बन दामिनि कों । इनि भांतिनि सुंदर

कान्ह लखे पुनि कोपु नहो कहुं कामिनि कों ॥ जुग लोचन लाल हैं लालन के चहुं जामनि जा-ग्यौ हैं जामिनि कों। अपराध भयो अति आवत या गति भावे तऊ पति भामिनि कों ॥ ८७ ॥

अथ मध्यमा लक्षण—दोहा।

पियकेहितसों होतिहित अनहितअनहित होइ।
ज्यों देखे त्यों अनुसरे नारि मध्यमा सोइ ॥८८॥

यथा—सवैया।

अँग लागे जगे निसि जाके जहां लिये आये सुगंध की बासु वहीं। ललना लखि लाल के पैने कटाच्छनि पीठि दै रूठि के बैठि रही ॥ कवि सुंदर सौंहैं खरे कर जोरि किती बिनती अब कान्ह कही। तब राधे कह्यो सखि सों हँसि के कहि तूं को भये अब नाह सही ॥८९॥

अथाऽधमा लक्षण—दोहा।

तियसों पीतम हित करे तिय रिसाइ बेकाज।
सो वह अधमा नाइका बरनत हैं कबिराज ॥

यथा—कवित्त ।

आवति ज्यों देखी पिय आगे जाइ लई तिय ऊँचे बैठारि कह्यो आदर भगति है। सुमन सुगंध साज सेज के समीप राखि तिहि समै भयो अति सेवक सों पति है ॥ सुंदर सवाद जामैं सुधाहू सों ऐसी पुनि बालम के बदन तें बात निकसति है । इते पर बोलै तऊ पीतम तें सतराइ भुक भहराइ भहराइ सी उठति है ॥८१॥

इति नायिकानिरूपणम् ।

अथ पद्मिन्यादिकथनं—दोहा ।

अवस्थान के भेद यह आये प्रथम बखानि ।
अब तिय की अँगचिन्हतें जाति चारि जियजानि॥
कहौंपद्मिनी चित्रिनी और संखिनी नारि ।
हस्तिनियौं इनि सबनि कौं बरनतहौं बिस्तारि॥

पद्मिनी—यथा ।

कमल के फूल कैसी बास अंग सुकुमार कमल सी जोनि महा अल तो न कहिये। चंदसो बदन तन चंपक सो कुंदन सो बनी ठनी सब

ठौर कैसी जहां चहिये ॥ भावै देवपूजा सेत बसन सौं रुचि हिये लिये लाज मान गति हंस की सी गहिये । थोरो खाइ पिकवैनी बिचछन मृगनैनी जामैं गुन सुंदर ए पद्मिनी सु कहिये ॥

चित्रिनी यथा—कवित्त ।

खीन कटि पीन कुच मीन से चपल नैन गजगौन कारे बार मोर की सी बानी है ॥ मधु के सो गंध जाके सुरत के जल को है लांबी है न ठेंगनो न पातरी न स्यानी है। सुंदर सलोम सुकुमार जोनि मजे तासु जैसैं फूल बटुरारो जामैं भखो पानी है ॥ रति सौं न रति उपभोगही मो रति चित्र संगीत सोभा लियें चित्रिनी बखानी है ॥ ८५ ॥

अथ संखिनी—कवित्त ।

मोटी लांबी नसैं देह तैसैं ऊँची मोटी कटि टेढ़ी चितवनि कुच छोटे छोटो मनु है। जोनि मैं बिगन्ध काम जल घन घने बार छताइल चलै चाल गाजत ज्यों घनु है ॥ रातो पट भावै

नख सुरत मैं लावै चारु तातो गात दयाहीन रीसही सो पनु हैं। दीरघ है दांत हाथ पांइ त्यों बहुत खाइ ऐसे जाके चिन्ह सोइ संखिनी को तनु है ॥ ९६ ॥

हस्तिनी यथा—कवित्त।

मोटी देह मोटे ओठ भूरे बार गोरी आपु थोरे लाज पेट भरि खात है अघाइ कैं। टेढ़े पाइ पाइन की आंगुरी है टेढ़ी सब ठेंगनी सी कूर पुनि बोलै घहराइ कै॥ काम जल की है गन्ध मद के गयन्द की सी सुरतु न कियो जाइ जासों सुखु पाइ कै। चलै मंदगति गहे कांधे जाहि नये रहैं हस्तिनी के लच्छन ए दिये हैं दिखाइ कै ॥ ९७ ॥

इति पद्मिन्यादि लक्षणम्।

अथ सखी वर्णन—दोहा।

जासों बात कहै सुनै जिय को बहु बिस्वास।
पास रहै परतीति की कहिये सखी सुवास ॥९८॥

दोहरा।

एहैं कामसखिन के तिय को भूषन बसन बनावे।
देइ उरहनो सिखदै जाने करि परिहासु हँसावे॥

भूषन बसन यथा—कवित्त।

जोबन को जोबन सिंगार को सिंगार किधौं रूपहू को रूप ऐसे रंग देखियतु है। तेरे अधरान की ललाई, लखि लालन के लोचन तो सुंदर सुधासों सीचियतु है॥ चीर पहिरे तें को धरैगो धीर मेरी बीर मांगही के चीरत वे हियो चीरियतु है। ज्यों ज्यों कर कांगही ले बारन सँवारति हो सौतिन की आंखिन करीत दीजियतु है॥ २००॥

अथ उराहनो—यथा।

काहे ह्वै रही हो मौन टेव कहा परी कौन ननिन सों कहो क्यों न यों निहारियतु है। खंजन कमल मृगमीनन के लैतवार सुंदर भये तो कोऊ यों बिदारियतु है॥ चातुर चलाक ज्यों है नागर हैं नायक हैं लायक हैं मानस छिराय

मारियतु है । बांके हैं बिसाल हैं बड़ाई की कहु हैं तो बिलोकतही आगिले को बेधि डारियतु है ? ॥ १ ॥

लालन के लखि लागत लोचन लाभ कहा ऐसो लोभ लखायें । जोहु की बात दुरे न जहां दृग क्यों निबहैंगे तहां मुकराये ॥ सुन्दर जोबन रूप सबै ऐसी को न भई बलि बैस के आये । मीखी चितैबो भलौ भई पै चितवो करो और को डीठ बचाये ॥ २ ॥

सिषा यथा — सवैया ।

क्यों लरिकापन में बलि आई हो त्यों अचरा अजहूं मति डारो । घूंघरी को धरि डोरी कसो भलके लहँगाउ को खूंट सुधारो ॥ होतु चल्यो नितही नित सुंदर छाती नितंब पिछाडियों भारो । कौलों रहोगी भटू अलबेली अजों अबहूं कपरा न सम्हारो ॥ १ ॥

अन्यच — सवैया ।

माहूबे की अलबेलपने ते बचाइ क्यों सासुरे

कैसें लहैगी । कीजै कहा अपनो बस है काहु सासु तो चाहै कछोहु कहैगी ॥ सुंदर ज्यों तबही अब त्यों अँखिया भरि लेहो तो काह रहैगी। आई कहां हो विचारि न देखो इहां वह रीति कहां निबहैगी ॥ ४ ॥

अन्यच—कवित्त ।

कौने धौं सँवारी जाइ भीतरही प्यारी वह कोहै बजमारी जिन बाहिर पठाई हो । जा-दिन लगीही दीठि तादिन तो नीठि नीठि सुं-दर मैं बीनती कै बिधि पैं बचाई हो ॥ मंचनि पढ़ाइ करि मंचनि मढ़ाइ धरि तंचनि कढ़ाइ कालि कौंहू मैं जिवाई हो । कियो कहा चा-हति हो मोई क्यों न कहो आजु काको बाट पारिबे कीं पाटी पारि आई हो ॥ ५ ॥

परिहास—यथा ।

बिथुरी अलक नैन रसभरे झलकत उठि आई रति मानि रसिक रसाल सीं । पिय के दसन लागे तिय के कपोलनि मैं औका परे ते

लखि यों बोली चली बाल सों॥ छापनी चरा है रहो सुन्दर उघरि हूह ऐसें कहि पोंछिबे कों भई कछु ख्याल सों । ज्योंही गह्यो गाल घाइ त्योंही प्यारी तिरछाइ मुरि मुसुक्याइ मुख मार्यो फूलमाल सों॥ ६ ॥

नाइका को परिहास नायक सों—सवैया ।

सौंह कहा तुम्हैं गंग की है यह मूंड तो भागीरथी सों भर्यो है। जो कहौ सुंदर पावक सौंह सु पावक तो निज नैन कर्यो है। गौरी कहै सिव सों हँसियों बिधिना हर ना*उ न झूठो धर्यो है। खेलत आजु जुवा मे अबै तुम दीजिये हार जु मेरो हर्यो है॥६॥

नायक परिहास नायका सों—कवित्त ।

बंधुजीव फूल की लै पांखुरी लगाई भाल मृगमद लायो ओठ अंजन सों ज्यों फबै ।ऐसो रूप किये प्यारो आवत है प्यारी पास प्यारी पेखि रूठि बैठी पीठि दै तहां तबै ॥ काजर

* शेष से हरना नाम निकलता है ।

अधर मैं न जावक लिलार है न सोहैं बेठो खीझो मति यों कह्यो अली अबै। राधा तो रही लजाइ हँसे हरि हहराइ हँसि हँसि गिरि गई सुंदर सखी सबै ॥ ७ ॥

इति सखी।

अथ दूती वर्णन—दोहा।

दूतपने मैं अतिनिपुन सो कहि दूती बाम।
जोरि देइ बरनै बिरह ये दूतिन के काम॥८॥

जोरिबो यथा—कवित्त।

सुनौ जू नवोढ़ा सुधैं आचरु दै जानति ना पिय पास बैठिवे की बात कहा जानी है। मेरे ल्याइवे की लाज कीजो लाल बलि जाउँ आतुर न हूजो वह अबहीं अयानी है॥ यहै रस रीति कहि सुंदर रसिक को जु रसही सो मिलि बोलैं बोरी रस बानी है। मैना सौ पढ़ाई अब पढ़र पढ़ाई परतीति मैं बढ़ाई तब क्योंहूं क्योंहु आनी है ॥ ९ ॥

सोने की सी डार सुकुमार वारे हैं सिंगार

सुंदर सुढार कटि मूठी में समानो है। मोतिन की माल मोती बेसरि को लेत हाल मोती से दसन मुख मोती को भो पानी है ॥ ल्याई हौं बुलाइ कै बलाइ लेउँ लाल वाल देखत हौं भलो मेरो मानिहौ मैं आनी है। नैनसुखदैन चित चैन होत सुनि बैन ऐनमैन मैनका कि मैनको की रानी है ॥ १० ॥

आखिन भौंहन मैं मनको जु खुले निधि सी छवि चातुरता की । हाथनि सों नहि यों करिये मनों पौन तें कापत कोंपलता की ॥ देखतही बनि आवै कहा कहौं नाहौ को नारि खुलै अब वाकी। नाही टरै नतियै कवि सुंदर कैसँ बसोठी करै कोउ ताकी ॥ ११ ॥

नाइका के पक्ष की दूती—कवित्त ।

दीठि सों न जोरै दीठि दै दै बैठे फेरि पीठि सुंदर बसीठी कहो कहा करैं तासी सौं। तिहारे तो लागी अब जाउ जाउ ल्याउ ल्याउ हौं तो फिरि आती ना तिहारी औ न वाती सौं ॥

कोक पचो राति दिन निबहै न एकु छिन नेह बिन कैसैं कै उँजारो होत बाती सौं। हौं तो थकी जाइ जाइ हाहा खाइ गहै पाइ आपुही मनाइ जाइ लाइ लेइ छाती सौं ॥ १२ ॥

नायक के पच्छ की दूती यथा।

तनयि तनैनी करि भौंहन को तानति हौ जितौ धौर गही मन तितौ तव गहैगो ?। जाही मुख मोसौं सतरानी सुनि मेरी रानी सोई मुख काम की कहानी हँस कहैगो ॥ सुन्दर सुघर घनश्याम जूको देखें ऐसी कामिनी को जो न काम दही घोर दहैगो। मेरे तो मनाए तें न मानति हौं लखि लाल, तौ बटौंगी मानिनी जो मान तब रहैगो ॥ १३ ॥

लाल अपने पै चलि छूतो न रिझैये बलि कहा भयो वाते हँस्यो नेक नन्दनन्दु है। बैठियतु बोलियतु झिलमिलि खेलियतु सुन्दरि यौं कौंजियतु हिये दुख दन्दु है ॥ हाहा देखि सौंहै तोहि कोटि कोटि सौंहै कारो ऐसे सबै

मान तेरो ऐसो मन मन्द है। कैसो नीको नायक सकल सुखदायक औ कैसी नीकी चांदनी औ कैसो नीको चन्द है ॥ १४ ॥

नायका को विरहनिवेदन ।

मेरी आलि आगे कालि टेढ़ी चाल चलिआई ता घरीतें खेलति न बोलति हँसति है । जैसें मीन बिनु जल क्यौंहू न परति कल सुन्दर बिकल भई बेसुधि ससति है ॥ कहूं डारे रहै मनु नेंकु न सम्हारे तनु रावरे निहारे हरिन्याइ तरसति है । आंखिन मैं भौंहनि मैं मुख मुसुक्यानि मै सुठौर ठौर ठगु तेरे ठगौरी बसति है ॥ १५ ॥

नायक को विरह निवेदन ।

कहूं बनमाल कहूं गुञ्जनि की माल कहूं सङ्ग सखा ग्वाल ऐसे हाल भूलि गये हैं। कहूं मोरचन्द्रिका लकुट कहूं पीतपट मुरली मुकुट कहूं न्यारे डारि दये हैं ॥ कुण्डल कपोल कहूं सुन्दर न बोलैं बोल लोचन हैं लोल मानो कहूं

हरि लये हैं। घूंघट की ओट ह्वैके चितयो कि ओट करी लालन तो लोटपोट तबहीतें भये हैं॥

अथ नायक वर्णन – दोहा।

दुहुन मिले सिङ्गार रस सरस होत है आनि।
जैसे बरनी नाइका त्यों नायकनि बखानि १७

दोहरा।

सो नायक पति उपपति वैसिक त्रिविध भेद यह ताको। व्याह्यो पति अनव्याह्यो उप· पति वैसिक पति गनिका को॥

पतिर्यथा कवित्त।

मग मै परे तें पग सुन्दर भरैगी डग कोमल कमल भूमि छोड़त है छनको। जिहिंठौर कांटे काठ कांकर परत आनि तिहि ठौर धरत हैं आपने चरन कों॥ जितै छांह सीरी तितै कियें जात प्यारी न्यारी जहां ताप तहां कीजे भी· रन सें तनकों। गहें रघुनाथ निज हाथनि सों हाथ ऐसें जानकी कों साथ लियें जात बन बनकों॥ १८॥

छन्द ।

सब कहत हैं पति नायकहि कवि ग्यान दीठि निहारि । अनुकूल दच्छिन धृष्ट सठ ये भेद चारि बिचारि ॥ १८ ॥

यथा ।

सो अनुकूल जो एकतें दूजियै नारि कहूं सपने नहि जानैं । दच्छिन सो सबको सम देखैं सदा रहैं जासों सबै सुख मानैं ॥ धृष्ट वहै अपराध भयो बरजेहु खिझै रस ठानेहु ठानैं । सो सठ जो कपटी रसकेलि मैं सुन्दर नायक चारौं बखानैं ॥ २० ॥

अनुकूल यथा ।

महादेव जूकी जो की जानी हम नीहचै कै आपनेहु जीतें प्यारी जाई गिरिवर की । पैडे चले आवैं अरधङ्ग धरे हृते पर याहीतें अधिक प्रीति रीति है री हर की ॥ मुण्डन की माल गज खाल व्याल कालकूट दाहिनीवाँ राखत लपट आगि झर की । बांई ओर सुन्दर सिवा के

इत फेरि फेरि सुधा सों सुधारि धरैं कला सुधाधर को ॥ २१ ॥

दक्षिण यथा।

दुतिया के दिन चन्द देवता को दरसन देखिबे कों जुरि आई आंगन मै दार हैं। आभूषन बसन बनाये नाना भांतिन के कीने आन आन अनगनति सिङ्गार हैं॥ एहि बीच मंदिर के भीतर तें निकसि कै देखो हरि सुन्दर यों सबै इक बार हैं। ऐसैं परी समदीठि सोरह हजार पर मानों मैन दैन नैन सोरह हजार हैं॥

धृष्ट यथा।

माखो है फूल की मालनि सो कर बांधिकै त्यों फिरि चौगुने चाइनि। सुन्दर वासों कितो खिजिये न तजै तऊ आपने सील सुभाइनि॥ बाहिरैं काढ़ि दियो दै कपाट हौं पोढ़ि रह्यो पटु तानि गुसाइनि। जो पल मैं पल खोलि कै देखौं तो पाइते बैठो पलोटत पाइनि ॥ २२॥

सठ यथा ।

कोन कहै वृषभान सुता कों सुनायो है कान्हर कौनेहु फेरे । सुन्दर नन्द के मन्दिर भीतर कैसो चितेरु चितेयो चितेरे ॥ राधिका दौरि चली सुनि देखन भेद न जाने गई अब नेरे । पाछे तें आइ गही पिय प्यारीयै लै गयो खन्नर धाम अँधेरे ॥ २४ ॥

उपपति लक्षण—दोहा

उपपति कहियै जार सों सठता तहँ निरधार ।
कबहूं होय न ताहि ये अनुकूलादि प्रकार ॥२५॥

यथा ।

लागो लेहु लपटाहु लेटि जाहु वेगि लेहु मिल मिलें रहे दोऊ नेह की हिलग में । अधर को रस पियें चाहत न छुट्यो हियें आहट के लियें कान्ह मन दियें मग में ॥ सुन्दर हर-बरात उर में थरथरात ऐसे हैं डरात पति कम्प जार पग में । ऐसे दुराटुर ही में सुरत कै करें जीव सांचो तिन जीवन को जीवन है जग में ॥ २६ ॥

अन्यच—कवित्त ।

कामकी के ध्यान ज्ञान रति की कथा ब-
खान मेरे जान पाये प्रान बातनि जहां जुरैं ।
हाइ भाइ नैन चाइ आन्यो ज्यों लियो जिवाइ
मिलिबे की दाइ घात भांति भांति की फुरैं ॥
सुंदर बिराम बहैं सांकरी गली मैं कहूं आपुस
मैं दोऊ मुसुक्याइ कै चलैं मुरैं । परगट मांझ
वैसे रस कहां पाइयतु जैसे रसचोप चाह होत
है दुरे दुरैं ॥ २७ ॥

वैसिक लक्षण—दोहा ।

जो पति अति गनिकानि सों करै सदा संभोग ।
वैसिक ताकों कहत हैं धीर गुनी सब लोग ॥

यथा—सवैया ।

कुंदन से तन चंद सो आनन कानन मैं
मुकुतानि की बारी । देखत आरसी पानन
खात भुजा मनों सुंदर ढारतैं ढारी ॥ ऐंठी सी
आंखि अमेठी सी भौहनि पैने कटाच्छ लटैं
लटकारी । छैल छबिलो सु कैसे मिलै छबि
जाकी मैं ऐसी अनेक निहारी ॥ २८ ॥

पतिउपपति वैसिकनि को कविको हुई बिचार
उत्तम मध्यम अधम अरु एक होहिं प्रकार ॥

उत्तमा लक्षण—दोहरा।

रामा रहै रिसाइ पीय पुनितिन जतननि कों गहै।
जिनतें रिसमिटिजाइ तियाको उत्तमलच्छन हुहै

यथा – सवैया।

आये चले पलिका पै लला ललना की
लखो अँगिया मतरानी। जानी कि रोस भरी
हैं तहां लै महारसिया रस रीतिन ठानी ॥
मांगै जु काहू सहेलिन पै कहि सुंदर सौंधे कि
पान कि पानी। तो अपने करलै करिकै हरि
दौरत बोलि सुधारस बानी ॥ ३२ ॥

मध्यम लक्षण – दोहा।

जो पिय रूठी नारिसों रस न करै न रिसाइ।
सो मध्यम चटकार लहै तिय के जिय के भाइ॥

यथा—कवित्त।

ज्योंही चले आये लाल दीठि भरि देखि
बाल बैठि रही मुख मूंदि मानो कंजकली है।

आदर न कछु लियो आगी ह्वै न पीय लियो
बोली न बिहँसि ठौरतें न चली हली है ॥
कान्हहू न कछू कह्यो जैसि देखी त्योंही रह्यो
फिरि लागो करन सिंगार बोलि अली है ।
राधिका की यह रीति भांति देखि मोहन की
मनसा पैं आनँद के फलनि सौं फली है ॥३४॥

अधम लक्षण—दोहरा ।

काम केलि को रूठन की तिय, कछू बिचार न जाके । सो वह अधम लाज डरु छोड़ु न, सपनेहू पुनि ताके ॥ ३५ ॥

यथा ।

जाति चलीही अलीन में आलि तहां लखि प्यादूकें दौरो धका कों । हौंतो गई गड़ि लाजन त्योंही हँसो सब ओठन दै अचरा कों ॥ ऐसो महा अति ढीठ सखी सुनि सुन्दर है यह औगुन जाकी । ताकी तूं बात चलावति है सपनेहु न देखिये री मुंह वाको ॥ ३६ ॥

अथ मानी चतुर।

ये दोऊ मानी चतुर बरनत हैं कविराइ।
संठ के इनके एक से जानो सबै सुभाइ ॥३७॥
इक मानो निज रूप के इक मानी निज गौंहि।
सुन्दर यों द्वै भांति के मानो नायक होंहि॥१८॥

रूपगर्वमानी यथा।

चापुन मांझ सलोन मती करि चाशु हँसी हरि सों इन ठानी । बांके बिलोकि, बिलास करैं कहि सुन्दर बाकी हजारन बानी ॥ जातह देइ कहा इनसों वह नेकहु चांखि तरेहु न चानो। माते गयन्द की नांई चलो गयो मोहन माई महा अभिमानी ॥ ३९ ॥

अपनो गौं को मानी — यथा।

प्रीति कछू इन यौसनि मैं पिय बाहिरही बहुते अरसानी । कान्ह कठोर महा मनकी ही कही अब राधिके सुन्दर बानी ॥ चानि न मान बढ़े इह जानिके चातुरता तब यों करि ठानी । मोहनी सों मिलु ऐसे किधौ मनभावन चापु नहीं भयो बानी ॥ ४० ॥

चतुर लक्षन दोहा।

बचननि करि करतूति करि करै जु चातुरताहि
ये सिगरे कविराज मिलि भाखैं चातुर ताहि॥

बचनचतुर यथा।

तू तौ है महासुजान तो समान कौन आन कहां लौं करौं बखान सुन्दर बनाइ कै। तोही तें पैहौं वह और तें न होय क्योंहू कैसेहूं जो करै कोऊ कोटिक उपाइ कै॥ जैसे मुह आपुनोई आप नाहिं देख्यो जात जौलौं बीच आरसौ न देति है दिखाइ कै। तैसे वह प्यारी निसदिन मेरे हिये बसै मिलै तबही तौ जब तूं मिलावै ल्याइ कै॥ ४२॥

पहिले तू आइ मिसु घालि बोलु चालि देखि कौ सुनैगो कान दै ता बनी सब चाहियै। आनी कौ ह्याइ तानो ओर को लै औरै ठानी सोई बातें ल्यानो जोई भावै हिय वाहियै॥ ऐसिन को बस कीबो सुन्दर कितोकु काम अति गति मतिन अथाह सिंधु थाहियै। बिगरी ब-

नाइबे को रस उपजाइबे को पिय तें मिलाइबे को भांति ऐसी चाहिये ॥ ४३ ॥

यथा ।

कञ्जन की लतान में गुंजरत अलिपुञ्ज कुंजनि की गलिन में धेनु बिझुकाति है । सुबल सुबाहु सिरीदामा सुनो ओरई जां जैहों हौं न मैया मो पै गैया न रुकाति है ॥ चातुरी सों राधिका कों सहेट की ठौर कीवो सुन्दर सुनाइ कहो सिगरी उगति है । जाने जे न जाने ते यों गोपनि तें कही बात आनत जे जान जाने तिन की टुकाति है ॥ ४४ ॥

क्रियाचतुर यथा ।

इतै वृषभानु जू की नन्दिनी है उतै उन आनँद को कन्द नन्दनंदन बढ़ायो है । आपने अपाने दोऊ चढ़े हैं अटानि पर सुन्दर कटाच्छनि को तहां भरि लायो है ॥ प्यारे पूछी कबहि मिलौगी इहि भाइ करि चंपे की ले हार निज कण्ठ मांझ नायो है । प्यारी

दियो जतक अवधि वही एहो रीति मुह मूंदि कमल के फूल को दिखायो है ॥ ४५ ॥

अन्यच्च—सवैया ।

एक समै दिन मांझ अलीन में बैठीही सुंदर राधिका रानी। आये तहां पिय सैन दई चलि प्यारी चितौनि में चातुरी ठानी ॥ सेत असेत कटाच्छ करे तिनमें स्रम जोन्ह की भांति है आनी। जानि गये हरि औधि बताई है नैन-नहीं में निसा की निसानी ॥ ४६ ॥

अथ प्रोषित लच्छण - दोहा ।

तजि निज तिय परदेसकों चल्यो विछुरि कै होइ।
सुंदरनायक सबनि में प्रोषित कहिये सोइ॥४७॥

यथा — सवैया ।

बार सेवार से बानी सुधा सौ सुधाकर से मुख जाको उजेरो । नैननि हाथनि पाइनि जाके गह्यो गुन कंजन को बहुतेरो ॥ सुंदर सों हिय माह निरंतर ऐसो है प्यारी पिया को बसेरो । जानतु हौं अपनोई अभाग इते पर-तापु तपै मन मेरो ॥ ४८ ॥

अथ अनभिज्ञ लक्षण – दोहा ।

जो न भयो कबहूं कहूं सपनेहूं में विज्ञ
इन्द्रायन के फलनि सम ते नाइक अनभिज्ञ ॥

यथा– सवैया ।

मंजन कै अँग रंजन अंजन दै करि खंजन नैन नचावै । अम्बर भूषन वेष बनाइ अनेक वै कंचुकी चोवा चढ़ावै ॥ साजि सिंगारनि सेज बिछाइ कै सुंदर मंदिर सूनो बतावै । बूझत है न इतै पर कूर ता और कहा कोउ ढोल बजावै ॥ ५० ॥

अथ नायकसहचर वर्णन – दोहा ।

जो नायक ये में कहे तिनके कहों सखानि ।
न्यारे न्यारे नाम करि लच्छन भेद बखान ॥५१॥

जो नायक सों नाइका नीके देइ मिलाइ ।
नर्म सचिव तासो कहैं राखै सदा रिझाइ ॥५२॥

नर्म सचिव पुनि चारि विधि सो कबिराज बखानि।
पीठमर्द बिट चेटकहि और विदूषक आनि ॥

अथ पीठ मर्द लक्षण—दोहा।

कोपवती के कोप कों बातनि देहि जुड़ाहि ।
रस पारै पिय सों तियहि पीठमर्द कहि ताहि ॥

यथा – सवैया।

भौर जो कामिनि कोटि कला सों बिलास बिकास करै बहुतेरो। देखै न कोहूं तज उनको चितु होतु है तेरी रुखाई को चेरो ॥ हा हा बलाइ ल्यों यों सतराइ चितै तिरछै बहुरी मुंह फेरो। सुंदर तो सतराहटही मैं सुधारसहूं तें सवाद घनेरो ॥ ५५ ॥

अथ बिट लक्षण—दोहा।

बातैं घातैं काम की जानैं सकल कलानि ।
दूतपने मैं अति निपुन ऐसे बिटहि बखानि ॥

यथा – सवैया।

काहेकों दूती बुलाइ पठाई निसा यह खो· वति हौ अरु खोई। आपुनही चलिये हिलिये मिलिये करिबे मन आनंद ओई ॥ छाती सों लाल लगाइ कै राखिये सुंदर ज्यों अंगिया पर

तोई । बीच की बीच दै बीच न पारिये मैं की बिचाखो बिचारिये सोई ॥ ५७ ॥

अथ चेटक लक्षण—दोहा ।

जिन बातनि तैं पिय तियहि बाढै सुंदर प्रीति ।
तिन बातनि मैं अतिचतुर यह चेटकु की रीति॥

दैव संजोग तें आइ जुरे जुग कुंज में आन्हर राधिका रानी । खिलैं न बोलि सकैं कहि सुंदर मौन ह्वै बैठि रहे जुर ठानी ॥ मेरो सकोच कियो दुन दोउन चातुर चेटक यौं जब जानी । या मिस आपु उहां ते उठ्यो जमुनातट जात हौं पीवन पानी ॥ ५९ ॥

अथ बिदूषकलक्षण—दोहा ।

सुंदर खेलत हँसत कौ कछू बिचार न जाहि ।
कूटि करै सबकी सदा कहैं बिदूषक ताहि ॥६०॥

यथा—सवैया ।

आपुहि कुंज कै भीतर पैठि सुधारि कै सुंदर सेज बिछाई । बातैं बनाइ अनेकन भांति की माधौ सौं आनि कै राधा मिलाई ॥ आली

कहा कहौं हांसी की बात विदूषक जैसी करी है ढिठाई । जाइ उहां पिछवार उतै फिरि बोलि उठ्यो वृषभान को नाई ॥ ६१ ॥

इति नायकसखाकथनं ।

अथ अनुराग—दोहा ।

कै देखे तें कै सुनै चित को लागै लागु ।
तासों कबिजन कहत हैं है बिधि को अनुरागु ॥

दृष्टानुरागो यथा—सवैया ।

चाइ सों चोप सों चाहन सों चित हो चिहुंट्यो जिन मैननिहीं सों । सुंदर जाकी रहै रस पागि सुने तें सुधारस बैननहा सों ॥ बैठी ही बाल अलीन में लाल चलो ढिग ह्वै लखि सैननिही सों । डीठी कपोलनि कूं निकसी यों कियो मनु चुंबन नैननिही सों ॥ ६३ ॥

श्रुतानुरागो यथा—कबित्त ।

झांकति झरोखनि में देखिवे की तलाबेली तबही तें तरुनी को ताप तनु तयो है ।

पान न कपूर खाइ कछू न सुहाइ ताहि सौंधे अंगराइ बिसराइ सब दयो है ॥ मेली है ठगोरी जानो ह्वै गई है बौरी गहि वहै जक रही गोरी वहै ध्यानु लयो है । जा छिन तें कान्ह की निकाई तू बखानि आई ता छिन तें माई वाको ऐसो हालु भयो है ॥ ६४ ॥

अथ दर्शनं - दोहा ।

स्वप्न चित्र परगट दरसनि दरसन तीन प्रकार ।
तिनकै सुंदर कवि कहैं न्यारे कै व्यौहार ॥६५॥

स्वप्न दर्शन यथा - कवित्त ।

आली आज सपने मैं देखे हैं री कान्ह ऐसें ठाढ़े वृषभान जू की पौरहो तें भिरि कें । तेहि ठौर तो न कोऊ येई देखियत कहूँ तुम हम सब मिलि बैठीं आइ घिरि कैं ॥ कहत हैं गोमती के तीर ह्वां न रह्यो गयो जमुना को दुखि सुख सुंदर सुमिरि कैं । गोपिका न कुंजन बिलास रास को न यातें द्वारिका तें छोड़ि आये ब्रज को फिरि कैं ॥ ६६ ॥

चित्रदर्शन यथा—सवैया।

देखि चितेर में ठाढ़े हौं कान्हर टेढ़े भये मुह नारि मुरायें। कैसे बजावत हैं मुरली तिरछे तकि भौंह सो भौंह जुरायें॥ चोरी की टेव कहां लौं परी यह राखिये बात कहां लौं दुरायें। मोहन मूरति सुंदर सूरति चित्रहु में चित लेत चुरायें॥ ६७॥

सच्छात दरसनं—कवित्त।

उमग उछाह उर आनन को ओप चित चातुरी को चाव चढ्यो तेज तन तबही। मिली रसरंग रिद्धि दरसु सकल सिद्धि पाइ नवौ निद्धि जो निकाई और सबही॥ मेह सो उघरि गयो कुहर सो फाटि गयो नैननि को उदै भयो सूर आजु अबही। जी मे जीव आयो सुख अंग अंग छायो कुह दरसन पायो साहिजहां जू को जबही॥ ६८॥

अथ शृंगाररस भेदकथनं—दोहा।

द्वै विधि को शृंगार है कहत सबै कवि लोग।
प्रथम आनि संजोग कौं बरनौं बहुरि वियोग॥

संयोग यथा—कवित्त ।

एक समै मंदिर मैं रमनि मैं स्याम रमैं देखतही मैनहूं को मैन सरसतु है । एकन को भेटि एक सेतु हैं लपेटि पुनि एकनि चपेटि कुच पीठ परसतु है ॥ छिरकै गुलाब सों गुपाल ज्यूं गुवालिकानि सुंदर सुरूप वह ऐसैं दरसतु हैं । मेरे जानि फूली फूली ललित लतान पर मंद मंद बूंदनि सें मेह बरसतु है ॥

दोहा ।

या संयोग सिंगार मैं उपजत हैं जो भाव ।
तिनके लच्छन भेद गुन बरनौं सकल बनाव॥७१॥

अथ भाव ।

सुंदर सूरति देखि सुनि चित मै उपजै चाव ।
प्रगट होइ हग भौंहतें ते कहियत हैं भाव॥७२॥

यथा ।

मांउ लियो यह जहाँ पातिसाह साहजहाँ अंग अंग तहाँ मैनमौज सरसानी है । फेरि करि नारि नेक दाँत सों अधर दाबि तिरछौ चितै कै पुनि मुरि मुसुकानी है ॥ लागी भू लिखन बावें पाँव की अँगूठा सों सुघनौट की छबि

मो पैं जाति न बखानी है । करि रस रीति आनो बैठी रति कों है औति याके चित प्रीति इहि भाँतिन तें जानी है ॥ ७३ ॥

अब सात्विक भाव ।

स्वेद कम्प स्वरभंग ए स्तम्भ विवर्न बनाव ।
रोमहर्ष अश्रू प्रलय आठो सात्विक भाव ॥७४॥

यथा ।

लोचन सजल चिलविचल वचन मुख चरन जुगल नेक टरत न टारे हैं। पौरी परि आई कहि सुंदर कपोलनि मैं काँपत अधर जानौं सुधा सों सुधारे हैं ॥ स्वेद ह्वैके भीज्यो तनु पुनि रोमहर्षनु लीन ह्वैके रह्यो सनु गुनन सम्हारे हैं। छिनही मै होइ गई आली आन हाथ जैसी जानति हौं कहूं ब्रजनाथहि निहारे हैं ॥ ७५ ॥

दोहा ।

जे संजोग सिंगार की कारनी उपजै भाव ।
ते लिलकिञ्चित आदि दै कहिये सोरह हाव ॥

किलकिञ्चित विभ्रम ललित हेला लीला हाव।
विहृत कुट्टमित मद तपन मौग्ध्या बरनि बनाव॥
मोट्टायित विच्छित्ति कहि पुनि बिब्बोक बिलास।
विक्षेप सहित एह सब कीने कविन प्रकास॥

अथ किलकिंचित।

आँसू रिस डर विकलता एकहि साथ जु होइ।
कंपहँसनिपियतनतकनिकिलकिञ्चितकहिसोइ॥

यथा।

गौनो भयो दिन द्वैक भये कह सुंदर नेह दुहू मै नवीनो। खेलत काम कलोलनि मै ललना का सुरूप लला लखि लीनो॥ दोऊ उरोज दबे तिहिं के तब एकहि बेर सबै दुख कीनो। रोई रिसानी डरी थहरानी चली अकुलानी चितै हँसि दीनो॥ ८०॥

अथ विभ्रम।

छिन मै भूषन पहिरि कै छिन मै धरै उतारि।
छिनमै रस अनरस छिनक विभ्रमयौं सुनिहारि॥

यथा।

छिनक मे भूषन मँगाये फेरि धरवाये छि-

नख मे पहिरि उतारि को धरति है । छिनक मैं उठि कै उहाँ तें आइ उहाँ बैठि छिनक मैं रस छिन रोसु मैं भरति है॥ कोउ आली आपु तें जो बोलै तो बरजिये पै औरहो सों कोलि बर बातनि ढरति है। देखिरी नवेली वह सुंदर सहेलिन मैं जोबनगहेली कैसे तमासे करति है ॥ ८२ ॥

अथ ललित ।

अलकभौंहचितवनिचलनिटेढ़ौमुरिमुसुकानि ।
हाथ पाइ सुकुमार अति ऐसे ललित बखानि ॥

यथा ।

सुंदर है बैन भौंह काम की कमान ऐन खंजन से नैन लघु अंजनहि दिये हैं । सोभि कीसी डार अति बनी ठनी सुकुमार बड़े बड़े बार हार मनिन के हिये हैं ॥ बेसरि की लह-राम मोतिन की थहराम मुरि मुसुकान कान्ह जू कों बस किये हैं । बिधिना सुधारे मुख सुधाही सों मेरे जान राधिका के सबै अंग माधुरिहि लिये हैं ॥ ८४ ॥

अथ हेला।

पिय के अँग लगि आपुही उपजावै अब काम।
करि मिलाप खेला करै हेला ताको नाम ॥८५॥

यथा।

सेज के समीप आइ लालन जगाइ पुनि आपुही तें उपजाइ लीजियतु काम है। उर सों लगाइ उर उरू परि उरू धरि कहूं काहू कम्प कहूं नैसुक बिराम है॥ पियमुख तन कियो चुम्बन को निजमुख सुंदर सुधाको विधि मानों सुधाधाम है। सुरत के समै प्रौढ़ा ह्वैकें पतिसंग रमै मिलाप में खेला करै हेला याको नाम है॥ ८६॥

अथ लीला।

जौलौं पिय आवै न ढिग तौलौं सखि सौं हासु।
पतिकोभितवनिचलनि कोस्वाँगकरैलीला सु॥

यथा।

मृगमद अंग लाइ चोवा कंचुकी चढ़ाइ ओढ़ि पीतपट स्यामरूप की यों ठान की। सुंदर

मुकुट मोरपंख बनमाल गरे पहिरि कै कुण्डल उतारी वारि कान को ॥ मुरली बजाइ नैन तिरछैं नचाइ पुनि मुरि मुसुकाइ कै सिखाइ सिख मान को । आपु भई हरि वाहि आपुन सौं करि ऐसी लीला करै ललिता सों लली वृ-षभान की ॥ ८८ ॥

अथ हाव ।

कछु इक अंकुर काम को तियतन उपज्यो होइ ।
पियहि देखि चौंकै डरै हाव कहत हैं सोइ ॥

यथा ।

हम सब अली मिलि बैठीं रंग रलिनि मैं दुलही यौं सहेली सौं खेल सो करति है । इह बीच काहू बाल बातनि मैं कह्यो कान्ह ऐसो डरो सुंदर ज्यों कोऊ न डरति है ॥ छोडि कै बिछौना मृगछौना ज्यों उछरि परी छाती छोह भरी हिय धीर न धरति है । हौं तो रही देखे मेरै अनसुने अनपेखि नांउ लियें ऐसें कोऊ चौंकि परति है ॥ ९० ॥

अथ विहृत ।

पिय समीप तिय के हिये बहुत जात अति चाह।
पूरे होत मनोरथ न विहृत् कहत कविनाह ॥

यथा – सवैया ।

कुंज तें कुंज रलौ रस पुंज तें गुंजत डोलति भौंरी भई है । एकौ घरी घर मैं ठहराति न ऐसी कछू इन टेव लई है ॥ एहो कहा कहिये कवि सुंदर जैसो चलो यह रीति नई है । काल्हि की बाल हमारेई देखत आजुही ह्वै गई कान्हमई है ॥ ८२ ॥

अथ कुट्टमित – दोहा ।

कुच पकरत अंकनि भरत आनँद सौं अनखाइ ।
करैं हहा नाही दई कहत कुट्टमित हाइ ॥८३॥

यथा – कवित्त ।

अधर सों अधर लगाओ मति गाढ़े गहो खंडित अधर देखि यहै जिय धरैंगी । सुंदर कपोलनि मैं चोका परै लखि लखि सखी सब ऐसी हैं जो बोली ठोली करैंगी ॥ मिसु चालि

तरकैं सुतरकी तनीन तकि दरकी कँचुकि लखि सासु रोसु भरैंगी। वातें रोम रोम डरौं तिहारे हौं पाइ परौं हाहा करौं छोड़ो जू जी-ठानी आइ परैंगी॥ ६४॥

अथ मद लच्छण—दोहा।

जोबन के मद सौं मतो चितवै चलै जु नारि।
ताही सो मद कहत हैं पंडित लोग बिचारि॥

यथा—सवैया।

जोबन के मदमाती है ऐंडि कै सुंदर काजर टीको बनाए। चूनरियां चटकीली छबीली को बसरियां चित लेत चुराए॥ ठाढ़ पयोधर जेहरि गाढ़ो हँसै हरि देखि घनी छबि पाए। नैन नचाए चलै नठुवासी अँगूठनि ऐंठि अनोठ उठाए॥ ६६॥

अथ तपन लच्छण—दोहा।

घरी चारि आवै न पिय तिय तचि कै अकुलाइ।
निदै निज भागनि सु यों तपन कहै कबिराइ॥

यथा—कवित्त।

दहन ज्यों दहत है देह की दुकूल देखि

सूल सो लगनि लाग्यो फूलनि को गहनो । सौंधे सेज सरस कुरंगसार घनसार सरसू सों सरसानो अब कहा कहनो ॥ ध्रुव के समान आये सुंदर सपतरिषि लटकी है हरिनी क्यौं होइगो निबहनो । आस धरे आलोकति आधी रात ह्वै गई पै अजहू न आये आली अपनो अलहनो ॥ ९८ ॥

अथ मुग्ध हाव—दोहा ।

मूरखता की बात कों कहै कछू जो नारि ।
मुग्धहाव तासों कहत पंडित लोग बिचारि ॥

यथा – सवैया ।

सुलता पुनि कैसी हैं कैसे हैं रूख वे होइँगे कौन सो रूप धरें । जिनको सुभ डारनि सों कह सुंदर ए मनि मानिक मोती झरें ॥ पिय ऐसो उपाय कछू है कहूं अपनी इन आंखिन देख परें । मनमोहन मोसो न बोलत ही मुसुकात कहा मुख मौन धरें ॥ १०० ॥

मोट्टायित हाव—दोहा।

पिय की बातनि के चले तिय अँगिराइ जम्हाइ।
हाव मोट्टायित कहैं ताहि महा कबिराइ ॥१॥

यथा—सवैया।

आवति हैं झपकी पलकैं झलकैं दृग बोलति हैं अलसातें। ऐंठि जम्हाइ उठै अँगिराइ अमेठति है तनको करिहा तें॥ अंग अनंग तरंग झकोरत सुंदर और तमासे न यातें। होति है प्यारी प्रिया तब यौंही चले जबहीं कछु कान्ह की बातें॥ २॥

अथ बिब्बोक हाव-दोहा।

पिय तें रिस यातें प्रिया करै न कछू सिंगार।
सखी मनाइ सँवारई ए बिब्बोक प्रकार॥ ३॥

यथा—सवैया।

काजर कांगहो तेल सुगंध सिंगार की सौंज सखी सब ल्याई। पीतम सों जिय मैं रिस यातें निरादर कै दृग भौंहै चढ़ाई॥ कोऊ न बोलि सकै चलि और तहां कबि सुंदर मैं समुझाई।

आजु मनाइ मनाइ निहोरि हरैं हरैं कैसेहु कैसैं बनाई ॥ ५ ॥

दोहा ।

लाल मनावै बाल कों दै भूषन पग धोक ।
बाल बांधि करमाल सों मारै इह बिब्बोक ॥

यथा—सवैया ।

आनि धरे हरि भूषन सौंज तिया चितवै न उतै हठ नाधें । लागे मनावन सौंहि कहा करि जोरत हाथ नवावत कांधें ॥ नेही भयो जब सुंदर प्यो मुह फेरि तिया नयना सर साधें । सीस मैं कंज कली को दई कर दाऊ लै फूल की माल सो बांधें ॥ ६ ॥

अथ बिलासहाव - दोहा ।

चलति कहूं चितवति कहूं यौं आवत पियपास ।
देखि पिय की सौंज सब सौंधि सेज अवास ॥
मोरै मुह भौंहनि दृगनि जोबन गर्ब उदास ।
पुनि बिहँसै मुसुकाइ मुरि यासौं कहत बिलास ॥

यथा—कबित्त ।

चितवति कितहू तें कितहूं को चलबेली

अलीन सों इठलात चली पति पास कों। बार बार मुसुकाइ भूठेई उठै रिसाइ सखिन को बहकाइ करै परिहास कों ॥ आई पिय ढिग धरे जोबन गरूर देखि बैठक बिछौना सेज सुंदर अवास कों। बैठी मुह मोरि दृग भौंहनि मरोरि कह्यो जाइ न करोरि जीभिहूं सों वा बिलास कों ॥ ९ ॥

अथ विक्षेप हाव लक्षण—दोहा।

अम्बर भूषन चलबिचल तनको कछु न सम्हार।
अलबेली जोबन गहिल ये विक्षेप प्रकार ॥ १० ॥

यथा—कवित्त।

एक हाथ चूरी एक पाइ मैं अधूरीलीक टीके की न पूरी पीक ओठ रह्यो छाइ है। फैलि रह्यो कजरा सम्हारति न गजरानि सुंदर जरा-ऊन के साज बिसराइहै ॥ अलकैं सुधारि अहो आंचरु सम्हारि सब देखति हैं नारि कहूं नांउ धरवाइहै। हाथी कैसो छैया भई डोलति है दैया दइ कहा भयो मैया या सयान अब आइहै ॥

इति हाव लक्षणम्।

अथ विप्रलंभलक्षर्ण—दोहा।

विप्रलंभ सिंगार पुनि सुंदर दुविध बखानि ।
बिछुरि गयो परदेस पिय एक भेद यह जानि॥
दूजो भेद यहै पिया पीउ बसे इक गांव ।
सुंदर डर तें लाज तें ह्वै न सकैं इक ठांउ॥१३॥

यथा—सवैया।

सुख सेज सुगंध सुधाकर सीत समीर सुहाति नही मखियो। कबिराज कहै इहि भांतिनि कैसे बिना जग जीवन जाइ जियो॥ कबहूं बिरहागिन मे तचवै कबहूं दृग नीर में बोरि दियो। पिय के बिछुरे हियरा इहि काम लुहार के हाथ को लोह कियो॥ १४॥

अन्यच—कवित्त।

सोरा सो सँवारि कै गुलाब माहि घोरा डारि सीतल बयारिहूं सों बार बार बरियो॥ चैन न परत छिनु चंपक तें चंदन तें चंद्रमा तें चांदनी तें चौगुनी कै जरिये॥ सुंदर उसीर चीर जजरी ते दूनी पीर कमल कपूर कोरि एक

ठौर करिये । एती मानि बिरहागि उठी तन मांझ लागि मोहे होत पागि जोर्ई यामे लाहू धरिये ॥ १५ ॥

यथा—सवैया ।

सूल से फूल कलिंदी को कूल दुकूल सु मूल भयो परिबे को । तंत पर्यो है बसंत को सुंदर कंत सो अंतर के परिबे को ॥ एतो ऽब औट अजान अनंग अचंभो कहा इनके करिबे को । तू क्यों जरावै जर्यौ हरतें दुख जानत जो जिय में जरिबे को ॥ १६ ॥

दोहा ।

बिप्रलंभ में होत हैं दसौं अवस्था आनि ।
अभिलाषा स्मृति गुनकथन चिन्ता जड़ता जानि॥
पुनिउद्वेग प्रलापकहि व्याधि बहुरि उन्माद ।
दसयों निधन सुकवि कहत जामे कछु न सवाद॥

अथ अभिलाष – दोहा ।

पियकीजियतिय मिलनकी होतिजहां अतिचाह ।
सुंदर तासों कहत हैं अभिलाषहिं कविनाह ॥

यथा ।

को ही तेरे साथ काल्हि सुंदर नई सी ग्वालि बांकी चितवनि चालि जोतें न टरति है । क्यौंहू वह आवै कहो कैसे आवै अजहूं तो सूधेहू न छाती पर आंचरू धरति है ॥ हाहा हँसि कहि देखि मानिहै तो मानिहै न मानि है तो जानि है कै हँसीयै करति है । अहो रहो टई ऐसी अबहीं कहां ते भई गौनिहूं न गई लई कैसे कै परति है ॥ २० ॥

अथ स्मृति लक्षण – दोहा ।

हाव भाव लावन्य तनु तिय को रूप सिंगार ।
बिछुरे तें जहँ सुमिरिये स्मृति को यहै प्रकार ॥

यथा – सवैया ।

अधरारस लेत लजौहैं से नैन निचौंहो सी भौंहैं भई जब वै । रति रंग अनंग तरंगनि मैं तुतुरात मुनी बतियां तब वै ॥ सुधि आवत सुंदर ऐसें अनेक सुतोऽब सुभाइ रहो मब वै । उरसौं मसकि रसकि अमकि जो लई ससकें कसकें अब वै ॥ २२ ॥

अथ गुनकथनं—दोहा।

बिरह बीच तिय गुनन को करिये जहां बखानि।
ताही सों यह गुनकथन सुंदर कहत सुजान ॥

यथा—कबित्त।

कुंदन सी तन की तनक छबि ताकतही सबै सुधि अपनेहू तन की भुलाति है। हीरा मोती मानिक अनारदाने दामिनि ये सबै रद जबै नेक मुरि मुसुकाति है ॥ सुंदर उसास लेत वाकी मुख बास के सुफूल छाड़ि भौंर पांति पास मडराति है। रूपकी उँज्यारी छिन ढिग तें न कीजै न्यारी ऐसी वह प्यारी सो बिसारी कैसें जाति है ॥ २४ ॥

अथ चिन्ता लक्षण—दोहा।

प्यारी सो दरसन मिलन कौन भांति तें होइ।
पिय सोचै जिय मै जु यों चिन्ता कहिये सोइ॥

यथा—सवैया।

केते बिचार बिचारत जी मै हकारन कौं उपचार बनाऊँ। ऐसे तो भाग हमारे कहा हैं

छबीलो को छाती सों छाती छुवाऊं ॥ जो इन आपनी आंखिन सों उन आंखिन कोसेहु देखन पाऊं । सुंदर तो गहि के अपनी पुनि या चित चिन्तहि मारि मिटाऊं ॥ २६ ॥

अथ जड़ता लक्षण—दोहा ।

तन अचेत जड़ता कहत जे पंडित कविधीर ।
यामे और न मानिये यहै जानिये पीर ॥२७॥

यथा—कवित्त ।

जबहीं ते देखे लाल तब तें बिहाल बाल न सुहाति माल तन ज्वाल ज्यों जरतु है। अनल है खायो किधों अनलही खाई आली काल ते करे जो बातें काल सों करतु है ॥ चित्र में चितेरी है कि सुंदर उकेरी है कि जंजिरनि जेरी है ज्यों बरी लौं भरतु है। मोहन तिहारे नाउ भेक चौंकि परति है याही तें भरोसो मोहि जीवे को परतु है ॥ २८ ॥

उद्वेग लक्षण—दोहा ।

जामे कामकलेस तें सुंदर कछु न सुहात ।
भली बात लागे बुरी सो उद्वेग कहात ॥२९॥

यथा—सवैया।

इक तो कलकान करै कबि सुंदर कोकिल के दिन राति रुतै। पुनि आइ रहै निसि कोटिक चन्द बढ़ावत है सु बिथा बहुतै॥ षटपदी वह तानिहै बान कमान तू जानति है मनसा के सुतै। नखसारि बिसारिहै साज सबै घनसार तुसारि उमारि उतै॥ ३०॥

अथ प्रलाप लक्षण—दोहा।

बिरह काम की पीर तें कहै आन को आन।
तासों कहत प्रलाप तें जे कबि हैं सुज्ञान॥

यथा—कबित्त।

तारा ऐन तरुनी के मांग मैके मोती फबे चंद्रमा सों माना चंद्रमुखी को बदनु है। खेलत ये खंजन ते ललना के लोचन हैं चंपक सो मानो तनु सोभा को सदनु है॥ बिद्रुलो है दाखो ताको दानो यह देखियतु सुंदर छिपत मानो हीए को रदनु है। मै तो अंग अंगना के आछे अवलोकत हौं तऊ काहे मोहि मौड़े मारतु मदनु है॥ ३१॥

अथ व्याधि लक्षण—दोहा ।

सुंदर बेदन मदन की तातें उपजै पीर ।
होइ दूबरी तन तपै व्याधि कहैं सो धीर ॥३३॥

यथा—कबित्त ।

कुंदन सो तन वृषभान जू की नंदिनी को चंप को सो फूल पंचबानही के बान सो । जिनके समान उपमान आन जगत में सोभा सुख संपति को सुंदर निधानु सो ॥ राजत हैं उर पर पयोधर जुगल यों सोनिहूं ते नीके अति सुमेरु को सानु सो । सोई तचै निस दिन कल न परत छिन सूकि भयो पिय बिनु पीरो पीरो पान सो ॥ ३४ ॥

अथोन्माद लक्षण—दोहा ।

मिलिबे की इच्छा करै बनै न मिलन सवाद ।
बिकल होइ या तापतें सो कहियतु उन्माद ॥

यथा—कबित्त ।

उमड़ि उमड़ि चलै काहू की न रोकी रहै कोई जानै सोई कहै ऐसी बिपरीति है । है

गई है पीरी पानी पान ते न होति नीरी छि-
नक मे सीरी छन आगि सी बरति है ॥ थकी
सी चकी सी जकी जकरी सी पकरी सी सुंदर
थरथराति धीर न धरति है । जब तें छबीले
जू के ईछन तीछन देखि ता छिन तें कौद कैसे
छंदनि करति है ॥ ३६ ॥

इति दशाकथनं ।

— ✽✽✽ —

अथ चेष्टा रीति—कवित्त ।

कैसे धरे रहत कपाई माइ निठुराई जाने
कछू जानत न थोरी वैस वितए । आवत अ-
चंभो हइ सुंदर इतीक ऐसी काम को कहा
तें घातें बातें सीखी कित ए ॥ कैसें हैं सयाने
काहू कहूं नेकहूं न जाने केती रहा बैठी आस
पास इत उतए । तीखे दृग कोरनि की ओरनि
सों देखो दोऊ चोर जैसे चातुरी के चोरा
चोरी चितए ॥ ३७ ॥

अन्यच – कवित्त ।

पहिले हौं गई नीके बातन लगाय लई

मैं हूं आन्यो भलो भई याकु बतराति है। सुंदर मैं हँसि के चलाई रस कथा कछू रीझि रीझि हँसि हँसि मुरि मुसुकाति है॥ ऐसे मैं तिहारो नाउ लियो जबही मै तब औरै रंग औरै रीति औरै भई भांति है। देखतही सौंहे भई डीठि तिरछौहैं वै तो गई फिरि भौंहे ज्यों कमान फिरि जाति है॥ ३८॥

अन्यच—सवैया।

कामकथा मैं कही कितनी पुनि कान कियो न कहूं उन मौंहै। जानि न जात बुहै धौं कहा अब मान गुमान कि रोस कठौंहै॥ लीजतु नाम तिहारो जबै तब सुंदर वा मुरि बैठति यौं है। मोरति नारि बिटोरति ओठनि जोरति नैननि मोरति भौंहै॥ ३९॥

अन्यच—कवित्त।

बानक सो बनि कै अचानकहूं आइ करि हाउभाउ चाहन सों चित चोरि लै गई। अंबर कपूर मृगमद की तरंग आवै अंग अंग

देखिं सुधि सुंदर सबै गई ॥ तिरछे चिते कै नैन तीर सी चलाइ पुनि घूंघट बनाइ नारि लटकाइ लै गई। चली मुरि मुसुकाइ अधरा कछू दबाइ छतियां देखाइ छेद छतियां मैं कै गई ॥ ४० ॥

देखै जहीं वह मोहनि मूरति पूर तें दौरि तहीं रस ठानैं। आपुही जाइ अगाऊ मिलै उर अंतर यों अपनाइत आनैं ॥ कोऊ है सुन्दर कोऊ मिलै समुझावै ज्यों दोऊ ये है करि जानैं। माहि कहा सिख देत सखी लखि ये अंगिया सिखवेई न मानैं ॥

नयन--सवैया।

सोहत सुंदर रंग भरे हैं किधौं कहूं सिह सुधा सों सुधारे। चंचल हैं सु चलैं न हलैं न हलाहल खाये से आलस भारे ॥ घूमत ढीले रँगीले छबीले रसीले किधौं मद सों मतवारे। सांची कहो इन नैननि आजु किधौं कहूं कान्ह कुमार निहारे ॥ ४१ ॥

यथा—सवैया।

नन्दनन्दन ठाढ़े हैं द्वार भये तहँ सुंदर मंदिर तें धसि कै। निकरी वृषभान लली जु चली न सु गली में लली जू चली हँसि कै॥ तब तें हरि के दृगतारन माझ यों राधे को रूप रह्यो बसि कै। मनो राख्यो है सोने को रंग अनंग सुनार कसौटिन मै कसि कै॥४२॥

यथा—कवित्त।

निस दिन वहै ध्यान वाही की कथा बखान बूझै जिय ज्ञान कहूं प्यारी वह दरसै। अकल विकल मन लालन को पल पल सुंदर ज्यों जल बिन मीन छीन तरसै। बाल के बिलोकि बिनु बालम बिरह तैसे जैसें कुरुखेत सोधु दिया दानु सरसै। छिन हो सुदिन भयो दिन हो सुपाख भयो पाख हो सु-मासु भयो मास हो सु-बरसै॥ ४३॥

यथा—सवैया।

आवत ज्यों मथुरा मै सुने हरि गैहनि तें

तिय दौरि करी सी । लाज को कोंड़ि ज्यों
छोरि तें टूटत मूठि तें छूटि चली चकरी सी ॥
देखत वा सुभ मूरतिकौं कवि सुंदर यौंही रही
पथरी सी । हाली न चाली ठगी सी सबै तै
छकी सी थकीसी जकी जकरी सी ॥ ४४ ॥

भावत न पानी पान आकुल विकल प्रान
गरभ के जे निदान ते सबै लुकावने। जिठानी
सौं कह्यो चहै सासु तन गई डीठि तहीं कियो
नैननि के पलक चुकावने ॥ दुहि बीच पहि-
लोठीं बाल कों बिलोकि आली पूछि उठी एहो
तुम्हे होत हैं उकावने । उठी सतराइ छबि
सुन्दर कही न आइ झुकि झहराइ बोल बोली
मुसुकावने ॥ ४५ ॥

काहे कों दुरावति है हमहूं भुरावति है
कौन कहलावति है झूठी सौंहे खाति है ।
लियो है चुराइ चित साहजहां दूलह को सु
तौ यह बात सब नीके जानी जाति है ॥ देख
तुहीं बैठ डीठ लालन की हेरि फेरि तियनि मैं

तोहि पर आइ थिर थाति है। मंच की कटोरी जैसे चली २ डोलति है चोरही की ठौर भलें आइ ठहराति है॥

प्यारी ज्यौंहि आई उठि मोहन मनाई चली खेल कौं सुहाई ऐसी कुञ्जनि कौं ये गली। मानौ मनुहारि देखो जिय में बिचारि तुम सुं-दर चतुर नारि नागरी महाभली॥ रहो जू गुसांई हम हैं गँवारि ऐसी कहि, कान्ह जू सों हाथ जोरि पालगन कै चली। छवि को छबीली की निरखि छबीलो छैल, छकि सो रह्योई रही छकि कै सबै अली॥ ४६॥

भौंहैं कमान सी बान से नैन कटाच्छ क-टारी सों रूप यों पायो। राखि उलट्टि नगारे पयोधर सुन्दर तंग सो हाथ उठायो॥ बेसरि नेजा है नाक धुजा मुखचन्द के हाथ निसान गहायो। कामिनि के तन मध्य मनो बिधि काम की फौज को साज बनायो॥ ४७॥

माइके न माइ बिन बाहिर दियो हैं वाइ

सासुरे सु सासुहो के साथ बसियतु है । देवर के कान धुनि नेवर की परै पुनि चोर कोमी नांई तो अटा में धसियतु हैं ॥ देखिबे को हौंसिनि परोसिनि मढ़ाई रही बोलतही बोल गरेही में कसियतु है । सुन्दर कहां को कान्ह कासौं पहिचान जान ककाकी सौं कहा जानौं कैसि हँसियतु है ॥ ४८ ॥

गोरस ले चली मिली आलिन मै ग्वाली एक आइ घेरि रह्यो बीच बाट मै बिहारी है । मांगत अगात कहि सुन्दर रिसात लखि रूखी भई जाति सतराति देति गारी है ॥ आगे गई सखी सब रही वा अकेली तब प्यारे कह्या आइ हँसि बोली तब प्यारी है । अरी वह आंखि जिन देख्यो भावै चोर पुनि कीजै क्यों न जो को जिय जग पैजिवारी है ॥ ४९ ॥

कंचन किलोकु कैसे कुंदन समान कीजे चंपे की निकाई नीची अंग पटतर तें । कमल सि नैन मन मोहत मनोजहू के उर सैं उरोज

अति राजत उछर तें । अलक को फूल कौन दारिम को कली कहा बोलतही चुयो परै सुधा सो अधर तें । ऐसो सिलिसिली औष सुन्दर कपोलनि की खिसिलि खिसिलि परै डीठि जिनि पर तें ॥ ५० ॥

अलीन के संग चलो मिलि कुंजगली में कलीन को हाथ चलायो । हँसो सखि सों अब आपु उहां हरि है तुम सुन्दर सोधु न पायो ॥ कहा कह्यो ह्वैहै री कान्ह तो देखो मै जान्योइ नाहिन काहू जनायो । वहँाऊ ये साथ अराऊ ये बात दई दई देखं इहाँ हँसि आयो ॥ ५१ ॥

अथ केश वर्णन ।

और तो सिंगार सब धरे रहो कान्ह वाके कचन की छबि कही परै एक आँगही । सुंदर कहै जो सुकुमार बार है सेवार भूले मखतूलहू की तूल उपमा कही ॥ एते मान बड़े बार पाटी पारियत अबै तीसरे मुकाम धसे केसनि तें काँमही । नारि पर आइ पुनि पीठि पर ठहराइ पीछै पहुंचति आइ क्योंहू क्योंहू काँकरी ॥

अथ बरुनी।

आँखिन आगे बिराजत सुन्दर मोरपखावल की छवि छायें। कारी महाअपकारी अन्यारी बिहारी निहारि के सामुहें आयें॥ यों तरुनी की बनी बरुनी पढ़ैं ब्राह्मन बेद ज्यों हाथ उठायें। ऊँचे कों टेढ़िये लेति मनो मनमोहन के मन कों उकसायें॥ ५३॥

अथ पीतम मिलन—सवैया।

परदेस ते सुन्दर पीतम आये हुलास बिलास बढ़े सिगरे। उर कराठ लगाइ लई ललना गहि गाढ़े अनन्द सों अङ्क भरे॥ तरकी है तनी दरकी अंगिया मनि माल ते टूटि के लाल परे। मनों पीके मिले तिय के हिय के अंगरा बिरहागिनि के निकरे॥

अथ स्नानं।

बैठी अन्हान बखानों कहा उपमा तिय की तिहुंलोक में नाहीं। खोले हैं भूषन कोरी है बेनी उतारि धरी अँगियाउ तहांहीं॥ पीत

पयोधर ऊपर सुंदर आकुली नारि नवाइ कै चाहीं। श्यामता यों कुच अग्रनि मानों परी दृग तारन की परछाहीं ॥ ५४ ॥

अथ रोमावली।

कैहूं उठे वृषभानसुता की अखानवाही अ-घरा की किनारी । देखि रोमावली रूप की रासि रहे मनही मन रीझि मुरारी॥ पूरब बैर तें संकर का कहि सुंदर ऐसो अनंग बिचारी। ईस के तीसरे नैन में दैन कों मानहु मैन स-लाक सँवारी ॥ ५५ ॥

अथ अलकवर्णन।

मानों भुजंगिनि कंज चढ़ी मुख ऊपर आय रही अलकैं त्यों । कारी महा भटकारी है सुंदर भींजि रही मिलि सौंधनहीं सों॥ लटकी लट वा लटकीली तें और गई बढ़ि कै छबि आनन की यों। आंकु बढ़े दिये टूके बिकारी के, होत अबैयन तें मुहरी ज्यों॥ ५६ ॥

अथ नीवी ।

चाँपि त्रिकुटी सों चुनी नाभि के निकट नीकी नवली की नीवी छबि कोटिक धरति है । बाँधि कसि डोरो राखी राखी कीसी फूंदि थोरी सुंदर गुलाब कीसी कली ज्यों हरति है ॥ ठाढ़ी बाल चाली सों कहत बात हँसि हँसि तबै मैं तमासे ऐसें घूंघुरी करति है । हूं कहै उकसि पावै हाँ कहै दबकि जाइ गाढ़े हँस दिये खि-सकिये परति है ॥ ५७ ॥

अथ वाणी—सवैया ।

मुकुता से झरैं मुख तें मुसुकात जबै वाकू अच्छर उच्चरिये । कह सुंदर ऐसे सवाद सुने तें सुधा मनो श्रौननि में भरिये ॥ पिकनीकन काकू करिये सु कविन्त कहा कवि कौं उपमा धरिये । तुमि बात कहै सुख लागत है बकिबोई करै सुनिबो करिये ॥ ५ ॥

अथ अंग—कवित्त ।

अद्भुत अलोप ह्वै कै रह्यो तीन्यौ लोकनि

मैं बाढ़वा लपाद् आन्यो कहानीये कही है । सुन्दर अधर नीचे रहे हैं लजाइ करि मैननि मैं माधुरी न ऐसी डह डही है ॥ मिसरी नै आगे जाकी दातनि तिनूका गह्यो समता को उपमा न आन कहूं लही है । तेरी यह बानी को मिठाई सुनि देखिये तो मीठी मीठी सौंज सब सौंहै ह्वै के रही है ॥ ५९ ॥

अन्यच्च -- सवैया ।

आजु लखी ललना पढ़िवे मैं कहा कहौं हौं तो महा अनुरागी । आरक तो पहिलै सुनि लेति है सुन्दर बोल गुरू पै सभागी ॥ आखर वै मुख तैं उचरैं फिरि बानी सुधारि सुधा रस पागी । मोहति यों सु पढ़ावनहार कों आपुही मानो पढ़ावन लागी ॥ ६० ॥

अथ उद्दीपन चन्द्रिकावर्णनं—सवैया ।

फूली कुमोदिनी मोद सौं चन्द बिनोद सौं सुन्दर तारे है त्योंही । मोती के हार घने घन-सार सनी सुख सेज सुगन्धनि सोंही ॥ राधिका

माधव जू जमुनातट ये जुग जोन्ह मैं जोये मै ज्योंही । जानत हो अनुमान रमा सँग होहिंगे छीर समुद्र मैं योंही ॥ ६१ ॥

अन्यच—सवैया।

रूपिकी भूमि की पारो पर्यो सगरो जग चंदन सो लपटानों । यों लखि जोन्ह महा कविराइ कहै उपमा इक याहू तें आनों ॥ चन्द की अंसुनि को करि सूत बुन्यों विधिना सित अम्बर जानों । उज्वल कै पुनि व्योंत बनाइ दसो दिसि मैं मढ़ि राख्यो है मानों ॥ ६२ ॥

दोहा।

सुरवानी यातें करी नर बानी मैं ल्याइ ।
जातें मगु रसरीति को सब पै समुझ्यो जाइ ॥
यह सुन्दरसिंगार की पोथी रची बिचारि ।
चूक्यो होइ जु कबि कहू लीजो तहां सुधारि ॥

॥ इति ॥